Supported By

1. Rajendra A. Dalal (Sanghesh) - Sikandarabad
2. Dr. M. M. Begani - Abhisek Day care - Mumbai
3. Ananya, Samayra, Sania, Pooja, Sohil, Mitul, Shilpa Mukesh Bhansali - Mumbai, Palanpur
4. Ramandevi Gyanchand Gandhi - Ahmedabad, Sirohi / Sulsa Chintan Shah - Ahmedabad
5. Madhuben Chothmal Parivar - Thara, Surendraguruji - Banglore
6. Harshi, Miska, Kiah, Niryan, Arham, Vinaben Rasiklal Gandhi / Panna Sandipbhai Parikh - Mumbai, Palanpur
7. Avika, Shweta, Shreyansh, Manjulata Sureschand Jain - Jaipur, U.S.A.
8. Ratnatrayi Pathshala - Opera House Khushal Devang Zaveri - Mumbai
9. Dhyan, Niev, Krupa, Dhruv, Kejol, Rushabh, Naina, Bharatbhai - Bharuch, Ahd, Delhi
10. Taruben Rameshbhai - Chhaya Gems, Vanee S. Mehta - Bangkok, Thailand
11. Chetna Umesh Manilal Lodaya - Kalpesh, Devang, Kajal - Solapur / On Occasion of Siddhitap of Achira Rinku - Surat
12. On Occasion of Siddhitap of Drashti - Angel, Kinnar, Dilip Vadilal Vasa - Jamnagar
13. Vruti Atul Shah (Krishil) - Ahmedabad / Renu S. S. Pokrana - Ahmedabad, Udaipur
14. Vruti Satvik Mardia (Satishbhai, Priti, Samyak) - Chennai, Ahmedabad
15. Vansrajji, Kushalrajji, Santoshji Bhanshali (Vruti, Shakshi) - Shantinagar, Ahmedabad
16. Divyansh, Disha, Bhavin Shah - Paldi, Ahmedabad / Atul Chinubhai Shah - Nardipur, Ahmedabad
17. Prashant Automobiles - Mancherial, A.P. / Rakhi, Parag, Vedika, Dhruvika Isro, Ahmedabad
18. Janahavi, Poojan, Rahil, Ronil, Darshil, Aarya, On Occasion Of Varsitap of Sejal, Devangshu Kothari - Ahmedabad
19. Kashvi, Sejal Jitendra Shah - Science City, A'bad / On Occasion of Siddhitap of Miti - Rina Paresh Shah - P/T, A'bad
20. Rikipuri, Aarti Gandhi, Payal Patel, Jyotiben Arvindbhai - Matunga, Mumbai, U.S.A
21. Nabdhi, Hitanshi, Shiparaa, Saurabh Kanted - J K Creation - Kankroli, Rajsamand, Rajasthan
22. On the Occasion of Varshitap of Sangita & Sanjay Bhandari - Nanded
23. Bherubhai jawerilalji, Santosh-Vasudevi Khated - Erode, Tamilnadu / Mangilalji Khivasra - Hospet
24. Hitesh Mohanlal Sanghvi (Sushilaben, Paresh, Priti, Kinnari, Mansi) - Chennai
25. Surajdevi Gulabchand Munot Parivar - Kheragadh, Raipur, Tatanagar
26. Pushpadevi Vasantkumar, Tina Jogeshkumar, Poonam Gulabchand Vedmutha Parivar - Revatada, Banglore
27. Shrimati Sitadevi Mangilalji Vedmutha, Lalitkumar, Mukeshkumar, Nirmalkumar - Revatada, Banglore
28. Shrimati Liladevi Nareshkumar Gadiya - Siddharth, Priyam, Siddhi - Banglore
29. Shantibhai Motilalji Chuttar - Pipliya kala, Bir / Nirmal C.A. - Vellore, Tamilnadu
30. Premchandji Sandipkumarji Mungeli - Kushal Hardware, Raipur
31. On A/C of Updhantap etc of Nishaben Sanjaybhai Shah - Dr. Priyank - Vyara
32. Aruna Rajendrabhai, Amit, Ruchi, Prashant, Megha, Priti, Vishal - Nagpur, Singapore
33. Ratilal Hargovandas Dagali - Vadhvana, Ahemdabad / On Occasion of 8 days fast of Darshan Atulbhai - Ahmedabad
34. Matrushri Hiraben Chatrabhuj Shah - Rameshbhai, Jaspara, Dahej / Usha Jain - Banglore
35. Ek Sadgruhasta - Ahmedabad, Ek Sadgruhasta - Mumbai / Dr. Samir Shah - Pune
36. Mahendra A. Shah - National Chairman Confederation of All India Traders - Ahmedabad
37. Indiraben Ratilal Shah (Idarwala) / Hiya Kunal Shah - Kruti, Deven - Ahmedabad
38. Shantilal Manilal Vohera - Nadiyad / Girish Singhvi - Hyderabad
39. Prachi Tapan Shah C.A. - Mumbai / Namrata C.A. - Mumbai
40. Birenbhai C.A. - Ahmedabad / On A/C of 30 days fast of Sunita Siten Shah - Mumbai
41. Hit, Jignesh, Rushin, Prashant, Pratapbhai, Narechaniya - Ahmedabad / Keval Deepak Maganbhai - Hyderabad
42. Meenaben Nareshbhai, Rutu, Dr. Jayati Anand - Shantinagar, Ahmedabad
43. Champaklal Bhayani - Ahmedabad / On Occasion of 15 Fast of Jyot Bhavinbhai - P/T, Ahmedabad
44. Pushpaben S. Jogani - Mumbai / Vibha Vikeshbhai Shah - Bharuch
45. Gyan - Dwiti - Vrushti - Abhay - Africa, Ahmedabad

विक्रम बाल वार्ता पार्ट-1

(चित्र बुक ओफ ब्रेवरी अेवोर्ड)

: संपादक :

पूज्य उपाध्याय श्री विश्रुतयशविजयजी म.सा.

विक्रम बाल वार्ता पार्ट-1

भाषा : हिन्दी
आवृत्ति : प्रथम
नकल : 2,000
किंमत : 100
दिव्याशिष :
दादा गुरुदेव पूज्य आचार्यदेव श्री **लब्धिसूरीश्वरजी** महाराज
प.पू. आचार्य श्रीमद् विजय **विक्रमसूरीश्वरजी** महाराजा
शुभ आशीर्वाद :
भरुच तीर्थोद्धारक-मार्गदर्शक, बनारस, कुलपाकजी, उवसग्गहरम् गोडी पार्श्व तीर्थोद्धारक
प.पू. आचार्य श्रीमद् विजय **राजयशसूरीश्वरजी** महाराजा

प्राप्ति स्थान :

चिंतन शाह
58/695, चित्रकुट अेपार्टमेन्ट, सोला रोड, नारणपुरा, अहमदाबाद-380063
मो. 93757 87857

मेहुलभाई शाह
221/2646, प्रतिक्षा अेपार्टमेन्ट, सोला रोड, नारणपुरा, अहमदाबाद-380063
मो. 94263 24200

मुद्रक :
जय जिनेन्द्र ग्राफिक्स (नितीन शाह - जय जिनेन्द्र)
नवरंगपुरा, अहमदाबाद
जय जिनेन्द्र : मो. 98250 24204, कुश : 99256 17992

प्रवेशक

वीरता के बीज, साहस, आत्मविश्वास और कुछ करने की जिज्ञासा को बचपन में लगाइ जाए तो वह बालक पेड़ जैसे गुणों से व्याप्त सर्वोत्कृष्ट नागरिक होगा।

1957 से बाल कल्याण पर भारतीय समिति यानी भारतीय बाल कल्याण परिषद (आईसीसी डबल्यू) बहादुर बच्चों की बहादुरी के सम्मान के माध्यम से आशास्पद अन्य शिशुगण एवं तरुण प्रोत्सहित हो जाते है। सन्मान के माध्यम से दूसरों को प्रेरित करने के लिए विभिन्न नामों के तहत वीरता पुरस्कार प्रदान कर रही है। हमारे ध्यान में पांच प्रकार के वीरता पुरस्कार आये है - 1. भारत पुरस्कार (1987 से), 2. गीता चौपड़ा पुरस्कार (1978 से), 3. संजय चौपड़ा पुरस्कार (1978 से), 4. बापू गैधानी पुरस्कार (1988 से), 5. राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार (1957 से) पुरस्कार के रुपमें पदक, प्रमाणपत्र और नकद अर्थराशि भी दी जाती हैं। और इन बच्चों को स्कूली शिक्षा के लिए छात्रवृत्ति भी दी जाती है। हर वर्ष तकरीबन 25 बच्चों को यह पुरस्कार दिए जाते है।

परिश्रम, वीरता, प्रशंसा और इनाम अमूल्य आभूषण हैं जो आमतौर पर सभी को एक ही समय में अपने जीवन में नहीं मिलते हैं। लाखों की संख्या में कुछ ऐसे भी हैं जो कठिन परिस्थितियों में भी अपनी अद्वितीय बहादुरी का परिचय देकर इतिहास रचते हैं। जो दूसरों के लिए आत्म-प्रेरणा बन जाता है।

एक से एक श्रेष्ठ रोमांच का परिचय देनेवाले ये सच्चे किस्से हमें यह समझाते हैं कि विपरीत परिस्थितियों में भी जुनून को बनाए रखते हुए निर्णय कैसे किये जा सकते हैं। जो न केवल बच्चों के लिए बल्कि बड़ो के लिए भी प्रेरणा का स्रोत है।

जैसा कि आप इन उपाख्यानों को पढ़ते हैं, आप अक्सर पाएंगे कि इन सभी घटनाओं के सूत्रधार हमारे चारों और हमारे पड़ोस में रहते हैं। या यह कहीं न कहीं हमारे निकट है। यह केवल सही समय पर निर्णय लेने की उनकी निर्णायक क्षमता है जिसने उन्हें विशेष बना दिया है। अलग-अलग नाम, क्षेत्र उम्र और स्थितियां इस राष्ट्रीय पुरस्कार को प्राप्त करनेवाले बच्चों को दिखा सकती हैं जैसे कि वे भले ही एक-दूसरे से अलग थे, लेकिन उन सभी में एक बात समान है और वह है उनका अद्वितीय साहस, ज्ञान और अपने स्वयं के जीवन की परवाह किए बिना दूसरों की जान बचाना।

हमें इतने सारे बच्चों की जीवन से सच्चे उपाख्यान मिलते हैं जो साबित करते हैं कि वीरता, साहस और अंतदृष्टि किसी एक व्यक्ति, जाति या धर्म का एकाधिकार नहीं है। शौर्य और साहस की ऐसी अनेक गाथाएं भरतभोम में हीं नही। पर दुनिया के कोने-कोने में छायी है। किसी ने किसी को बाढ़ में बह जाने से बचाया हो, किसी ने आग या सड़क दुर्घटना से या आदमखोरों के हमले से बचाया हो, किसी ने दृढ संकल्प के साथ चोरों या लुटेरों का सामना किया हो, वीर बच्चों की सफलता की कहानियां सुनहरे अक्षरों में लिखी जाती हैं। जीवन में कई मौके आते हैं जब हमें घातक परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। उस समय हमारे पास केवल दो रास्ते होते हैं। पहला रास्ता है कि अपनी जान बचाने के लिए किसी सुरक्षित जगह पर भागना और दूसरा रास्ता है कि बिना अपनी जान की परवाह किए दूसरे असहाय लोगों की जान बचाई जाए। यह दूसरा रास्ता वाकई मुश्किल है। और इस राह पर चलनेवाले संवेदनशील, साहसी, बुद्धिमान और त्वरित निर्णय लेनेवाले अवश्य होते हैं, क्योंकि ऐसे समय में जरा भी चूक होने पर बहुत भारी पड़ जाता है।

हम श्रीमती विजया कोटेचा-चेन्नई, राज भास्कर, सतीश मरडिया-अहमदाबाद एवं सभी अर्थ सहयोगीयों को साधुवाद देते हैं।

पाठको से निवेदन है कि आगे पृष्ठ नं. 29 पर दिए गए पांच प्रश्नों को पढकर अपने प्रतिभाव मो. 93765 40599, 98244 44431 पर भेजें।

उपा. विश्रुतयशविजय (प्रोफेसर महाराज)
आंबावाडी, अहमदाबाद
दि.: 31 अगस्त 2022, संवत्सरी महापर्व

1. 'डरावने को डराओ'

(जोएना चक्रवर्ती)

"एक बार तू मेरे हाथ आ, फिर तुझे पता चलेगा,
यह छोटी सी छोरी, शेरनी है या चिड़िया।"

जोएना, मात्र दस वर्ष की अल्पायु में भी अपार साहस की धनी थी। उचित कद-काठी के संग आकर्षक व्यक्तित्व की धनी थी। लड़की होते हुए भी उसका व्यवहार रहन-सहन, हाव-भाव व रूचि सारी लड़कों जैसी ही थी। उसे क्रिकेट खेलना, कसरत करना व छोटे बाल रखना बहुत पसंद था। निडरता ही उसके व्यक्तित्व की विशेषता थी।

परन्तु उसके माता-पिता उसकी इन हरकतों व अजीबोगरीब शौक से हैरान-परेशान रहते थे। उन्हें कभी समाज की चिन्ता सताती तो कभी किसी अनहोनी का डर। टोके जाने पर प्रायः जोएना निडरता से कहती -"माँ, मैं लड़की बनकर पैदा हुई हूँ तो क्या हुआ, हमेशा शरमाना और मन मारकर रहना जरूरी थोड़े है। मैं तो अपने तरीके से वैसे ही जीऊँगी, जैसा मुझे अच्छा लगता है। और जो बदमाश लड़के मुझे व मेरी सहेलियों को छेड़कर परेशान करते हैं उन्हें तो सबक सीखाना जरूरी होता है ना माँ ?"

बात नवंबर के महीने की है। दिल्ली शहर सर्द हवाओं के चलते मानों जम सा गया था। सभी अपने-अपने घरों में दुबके हुए थे। वातावरण नीरव था। जोएना अपने माता-पिता के साथ दिल्ली घूमने आई हुई थी। दोपहर को तीनों होटल से बाहर निकले। माँ धीरे चलने के कारण जरा पीछे रह गयीं। जोएना अपने पिता के साथ-साथ चल रही थी। पिताजी के हाथ में महँगा मोबाइल फोन था। अचानक एक व्यक्ति पीछे से तेजी से आया और पिताजी को जोर से धक्का लगाकर नीचे गिराकर मोबाइल हाथ से छीनकर भाग खड़ा हुआ। जोएना अकस्मात हुई इस घटना से पहले तो जरा सहम गई परन्तु बाद में अपनी हिम्मत से काम लिया और पूरी ताकत लगाकर चोर के पीछे दौड़ी। चोर ने उसे पीछे आते देख जोर से धमकाया। परन्तु उसके बहादुर मन पर उस धमकी का कोई असर न हुआ। वह तो बस उसे पकड़ना चाहती थी। आखिरकार जोएना ने चीते के समान फुर्ती से उस चोर पर छलांग लगायी और भूमि पर गिराकर उसकी छाती पर चढ़ गई और लात व घूसों से मारने लगी। जोएना ने जोर से चिल्लाकर कहा - "आ ! अब तुझे बताती हूँ कि मैं चिड़िया हूँ या शेरनी।" चोर स्तब्ध था उसकी हिम्मत पर। वह चाहते हुए भी उसके चंगुल से बाहर नहीं निकल पा रहा था।

एक दस वर्षीय बच्ची को एक जवान मुसटंडे चोर को पीटते देख, हल्ला सुनकर चारों तरफ भीड़ जमा हो गई। जोएना के पिता ने भीड़ को सारी सच्चाई बताई। पुलिस भी आ गई। इंसपेक्टर के साथ-साथ भीड़ में मौजूद हर एक व्यक्ति ने जोएना के शौर्य व हिम्मत की भूरी-भूरी प्रशंसा की। देश की सारी बेटियों को जोएना की बहादुरी से प्रेरणा लेनी चाहिए।

छत्तीसगढ़ में जोएना की वाह-वाही होने लगी। टी.वी. व अखबार में जोएना की बहादुरी के किस्से बताए जा रहे थे।
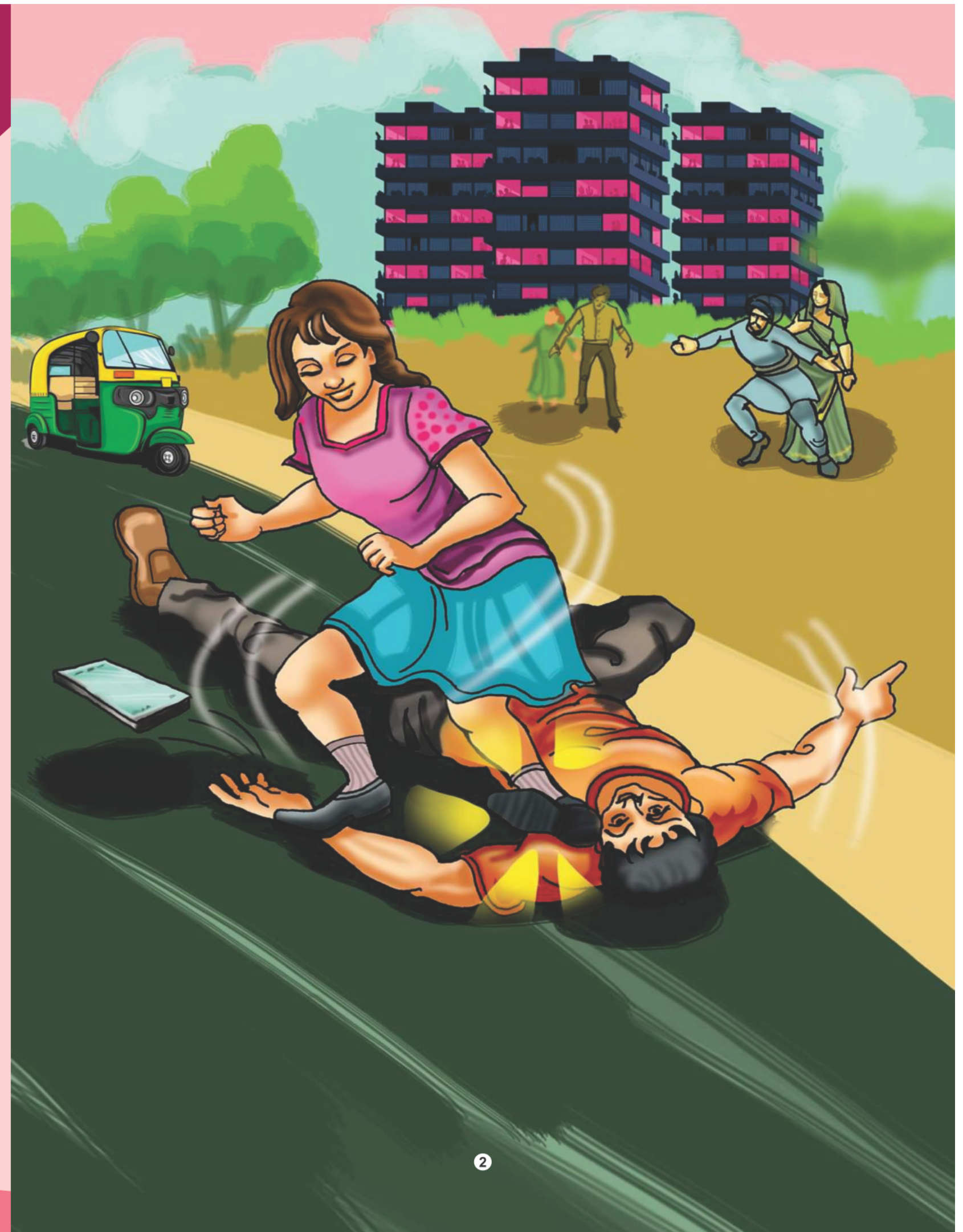
2. 'कभी न हिम्मत हारिये'

(कशिश धाणाणी -अहमदाबाद, गुजरात)

"मैं मेरी बहन का बड़ा भाई हूँ।
मुझे तो कैसे भी इसे बचाना है।"

दिसंबर की गुलाबी सर्दी की शाम थी। कशिश अपनी मम्मी से पार्क में जाकर खेलने की अनुमति माँग रही था। अपने साथ अपनी छोटी बहन जो मात्र एक वर्ष की थी, उसे भी ले जाना चाह रहा था। माँ ने कहा - "बेटा ! तू खुद छोटा है, इसे कैसे संभाल पाएगा ?" इस पर कशिश ने एक जोरदार बड़े भाई की तरह जवाब दिया - "मम्मी ! मैं दस वर्ष का हूँ तो क्या हुआ, हूँ तो मैं इसका बड़ा भाई। और बड़ा भाई होने के नाते मैं इसका खूब ध्यान रखूँगा। प्लीज मम्मी जाने दो ना। हम लोग खूब खेलेंगे।" कशिश के आग्रह पर मम्मी ने जाने दिया और बहन का ख्याल रखने की हिदायत दी। ठंड का मौसम होने के कारण पार्क में कोई विशेष चहल-पहल न थी। कशिश ने छोटी बहन को घास पर बैठाया और खेलने लगा। थोड़ी देर बाद एक वृद्ध महिला अपने जर्मन शेपर्ड कुत्ते को लेकर पार्क में टहलने आयी। कुछ देर टहलने के बाद वह बेंच पर बैठ गई और अपने कुत्ते को आजाद छोड़ दिया। कुत्ता गुर्राते हुए कशिश व उसकी बहन की ओर लपका। उसने बच्ची के पैर को जबड़ों में कस लिया। कशिश पहले तो घबराया परन्तु फिर हिम्मत करके कुत्ते को दूर भगाने की कोशिश करने लगा। उसने अपनी छोटी बहन को गोद में उठाने की कोशिश की, परन्तु कुत्ते का शिकंजा इतना मजबूत था कि वो छुड़ा नहीं पा रहा था। दोनों बच्चे मदद के लिए चिल्ला रहे थे। परन्तु सर्दियों की शाम थी सारे लोग अपने-अपने घरों में बंद थे। अब कशिश ने दृढ़ निश्चय किया अपनी बहन को बचाने का। उसके सामने सिर्फ अपनी बहन के प्राण थे। भागकर गया और कुत्ते के साथ गुत्थमगुत्था हो गया। अचानक उसमें इतनी ताकत आ गयी कि यदि शेर भी सामने होता तो वो उसे भी हरा देता। इतने में लगातार हो रहे शोरगुल को सुनकर कुछ लोग दौड़कर आये, एक पुलिस कर्मचारी जो वहाँ से गुजर रहा था, वो भी मदद करने दौड़ा। सभी ने मिलकर उस छोटी बच्ची को कुत्ते के शिकंजे से छुड़ाया। कशिश ने तुरंत उसे अपनी गोद में उठा लिया। वो लगातार रो रही थी। मम्मी को जैसे ही घटना के समाचार मिले वो दौड़ी-दोड़ी आई। सभी ने कहा- "बहन ! यदि तुम्हारा बहादुर बेटा न होता तो शायद बहुत बड़ा अनिष्ट हो जाता।" माँ ने दोनों बच्चों को गले लगा लिया।

कशिश की बहादुरी का किस्सा न सिर्फ उसकी बिल्डिंग में बल्कि सारे आस-पड़ोस में आग की तरह फैल गया। मीडिया ने भी उसके साहस की भूरी-भूरी प्रशंसा की और अगले दिन इस खबर को समाचार पत्र, टी.वी आदि में बताया गया।

कशिश की इस बहादुरी को भारत सरकार ने दि. 26 जनवरी 2016 को गणतंत्र दिवस की परेड में हाथी पर बैठाकर गीता चौपड़ा बहादुरी पुरस्कार से सम्मानित किया।

सबक - परिस्थिति चाहे कैसी भी व कितनी भी भयानक क्यों न हो, कभी भी हिम्मत नहीं हारना चाहिए।

3. 'बहादुरी पुरस्कार'

(राकेश शानाभाई पटेल -गुजरात)

"हिम्मत की उसने और कुएँ में छलांग लगा दी।
और दोनों को बचा लिया।"

गुजरात और मध्यप्रदेश की सीमा पर बसा देवगढ़। नौ प्रकृति के अप्रतिम सौन्दर्य की अपूर्व मिसाल था। प्रकृति मानों नववधु की भांति सोलह श्रृंगार से सज्जित खुबसूरत प्रतीत हो रही थी। इसी देवगढ़ तालुक में बसा छोटा सा गाँव था उधावाला। यह कहानी इसी गाँव के वीर बालक राकेश की है। दुर्भाग्यवश राकेश ने बचपन में ही अपने माता-पिता को खो दिया था। अनाथ था परन्तु उसके बल, बुद्धि, सेवा आदि सद्गुणों के कारण वह पूरे गाँव का चहेता था। प्रेमपात्र था।

एक दिन उसे अपनी हिम्मत व काबिलियत अजमाने का मौका मिल गया। हुआ यूँ कि - गाँव के निवासी पारसिंग भाई के दो बेटे थे दिनेश और हसमुख, जो 5 और 7 वर्ष के थे। एक दिन दोनों खेलते-खेलते खेत के मध्य में बने बिना पाल के कुएँ के नजदीक पहुँच गए। खतरे से अनजान दोनों अपनी मस्ती में मस्त थे। भागा-दौड़ी करते-करते अचानक एक का पैर फिसला और वो धड़ाम से कुएँ में गिर पड़ा। दूसरे ने आव देखा न ताव वो भी उसे बचाने कुएँ में कूद गया। दोनों कुएँ में बचाओ-बचाओ चिल्लाने लगे। परन्तु उस सूनसान जंगल जैसे इलाके में उनकी गुहार सुनने वाला कौन था ? फिर भी वे एक उम्मीद के साथ लगातार चिल्लाते रहे। थकान के मारे उनकी आवाज मंद होने लगी थी। सद्भाग्य से उसी समय राकेश वहाँ से गुजरा। उसने बचाओ-बचाओ की धीमी-धीमी आवाज सुनी और ठिठक कर वहीं रूक गया। उसने चारों ओर नजर घुमाई परन्तु कोई नजर नहीं आया। फिर भी उसने कोशिश नहीं छोड़ी। वो लगातार इधर-उधर दौड़-दौड़ कर ढूँढने लगा। अचानक नजर कुएँ पर पड़ी नजदीक जाकर झांककर देखा तो उसे दो बच्चे अंदर दिखाई पड़े। उसने इधर-उधर देखा, परंतु दूर-दूर तक कोई नजर नहीं आया। उसने निश्चय किया कि अब वो ही उन्हें बचाएगा। निश्चय करके कुएँ में कूद गया और एक हाथ से कुएँ के भीतर उगे पेड़ की जड़ को पकड़ लिया और दूसरा हाथ उन बच्चों के आगे कर दिया। उन्हें ढ़ाढस बंधाते हुए कहा - "घबराओ मत। मेरा हाथ पकड़ लो मैं तुम्हें बचा लूँगा।" दोनों ने हिम्मत करके राकेश का हाथ पकड़ लिया। राकेश ने जैसे तैसे दोनों को धीरे-धीरे ऊपर की ओर खींचा और आखिरकार किसी फिल्मी हीरो की भांति दोनों को बाहर निकालने में कामयाब हो गया। 13 वर्ष के उस बालक ने जान पर खेलकर उन बच्चों को बचा लिया। सारी घटना की खबर शीघ्र ही पूरे गाँव, पूरे जिले में फैल गई। बच्चों के माता-पिता ने धन्यवाद के साथ-साथ राकेश के सर पर आशीर्वाद के ढ़ेर लगा दिये।

दूसरे दिन शाला प्रबंधन ने उसका तहेदिल से सम्मान किया। गुजरात सरकार के मंत्री श्री बच्चुभाई ने स्वयं वहाँ आकर राकेश का सम्मान किया। उसकी बहादुरी के किस्से टी.वी., समाचार पत्रों में छा गए।

भारत सरकार ने उसे बहादुरी पुरस्कार देने हेतु दिल्ली बुलाया। दि. 26 जनवरी 2016 को परेड में हाथी की सवारी में सम्मिलित करके देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने गीता चौपड़ा बहादुरी पुरस्कार से सम्मानित किया।

4. 'जो दूसरों की मदद करता है भगवान उसकी मदद करता है'

(रामदीन थारा -मीजोरम)

"अगर हम दिल से किसी की मदद करते हैं
तो भगवान भी हमारी मदद करता है।"

भारत देश की पूर्वी दिशा में बसा एक सुंदर राज्य मीजोरम । यह कहानी है मीजोरम राज्य के एक गाँव में रहनेवाले रामदीन की । 15 वर्ष की अल्पायु में भी अपार हिम्मत का धनी व सरल स्वभावी था रामदीन । रेलवे स्टेशन पर पिताजी की चाय की दुकान में पिताजी का हाथ बंटाता था । सुबह स्कूल जाता और शाम को चाय की दुकान का काम पूरी कर्मठता से संभालता था । पिताजी का हृदय उसके सेवाभाव को देखकर गद्‌गद् हो उठता । वे कहते - "बेटा ! बहुत आगे बढ़ना, खूब तरक्की करना । दुनिया में खूब नाम रोशन करना ।"

जनवरी का महीना था, साल 2015 । गाँव से बाहर आने-जाने का एक ही रास्ता था । उस रास्ते में एक हाईटेंशन लाईट का ट्रांसफार्मर था । यही वजह थी कि गाँव का हर व्यक्ति उस रास्ते से जाने से कतराता था, डरता था । क्योंकि यदि भूल से भी जरा सा भी छू जाए तो जोर का करंट लगने से मृत्यु का भय था । इसीलिए इस रास्ते को छोड़कर अन्य लंबे रास्ते से आने-जाने में ज्यादा सुरक्षित महसूस करते थे ।

उसी दिन गाँव के दो लड़के, जो अच्छे दोस्त थे, एक दूसरे को अपनी बहादुरी की डींगें हांकते हुए उसी रास्ते से निकलने लगे । हम किसी से नहीं डरते, कोई खतरा-वतरा नहीं है। अचानक न जाने कैसे थोड़ी सी असावधानी होते ही एक करंट की चपेट में आ गया और बूरी तरह से तड़पने लगा । दूसरे ने बिना सोचे समझे मदद के लिए हाथ आगे बढ़ाया तो वह भी वहीं करंट से चिपक गया। दोनों की हालत मरणासन्न सी हो गई थी। बार-बार मदद के लिए पुकारने लगे।

दूसरे रास्ते से गुजरते हुए रामदीन और उसके पिताजी के कानों में उनके चिल्लाने की आवाज पड़ी। दोनों मदद करने के लिए दौड़े। परन्तु वहाँ पहुँचकर उन दोनों की हालत देखकर दोनों सकते में आ गए। दोनों उनकी मदद करने की तरकीब सोचने लगे। इधर-उधर लकड़ी ढूँढ़ने लगे। परन्तु उन्हें लकड़ी कहीं नजर नहीं आयी। अचानक रामदीन बाज़ की फुर्ती से लपका और एक लड़के के बालों को पकड़ कर जोर से खींचा, वो लड़का छिटकाकर दूर जा गिरा। रामदीन ने हिम्मत करके दूसरे लड़के को भी इसी तरह खींचकर उसे करंट के प्रवाह से अलग किया। आखिरकार रामदीन की हिम्मत, सूझबूझ और परोपकार का भाव काम कर गया। दोनों की जान बच गई। जब लोगों को बात का पता चला तो सबने रामदीन की हिम्मत की खूब तारीफ की। डॉक्टरों ने कहा यदी थोड़ी देर और हो जाती तो दोनों को मरने से नहीं बचाया जा सकता था। सबने रामदीन से पूछा कि आखिर ऐसी विकट घड़ी में तुम्हें ये उपाय सूझा कैसे? रामदीन ने सरलता व आत्मविश्वास से जवाब दिया कि - "भगवान भी उनकी मदद करता है जो दूसरों की मदद करता है।"

पूरे मीजोरम में रामदीन की बहादुरी के किस्से गूँजने लगे। रामदीन को दि. 26 जनवरी 2016 को गणतंत्र दिवस पर हाथी की सवारी करवाई गई और उसकी वीरता के लिए देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने गीता चौपड़ा पुरस्कार से सम्मानित किया।
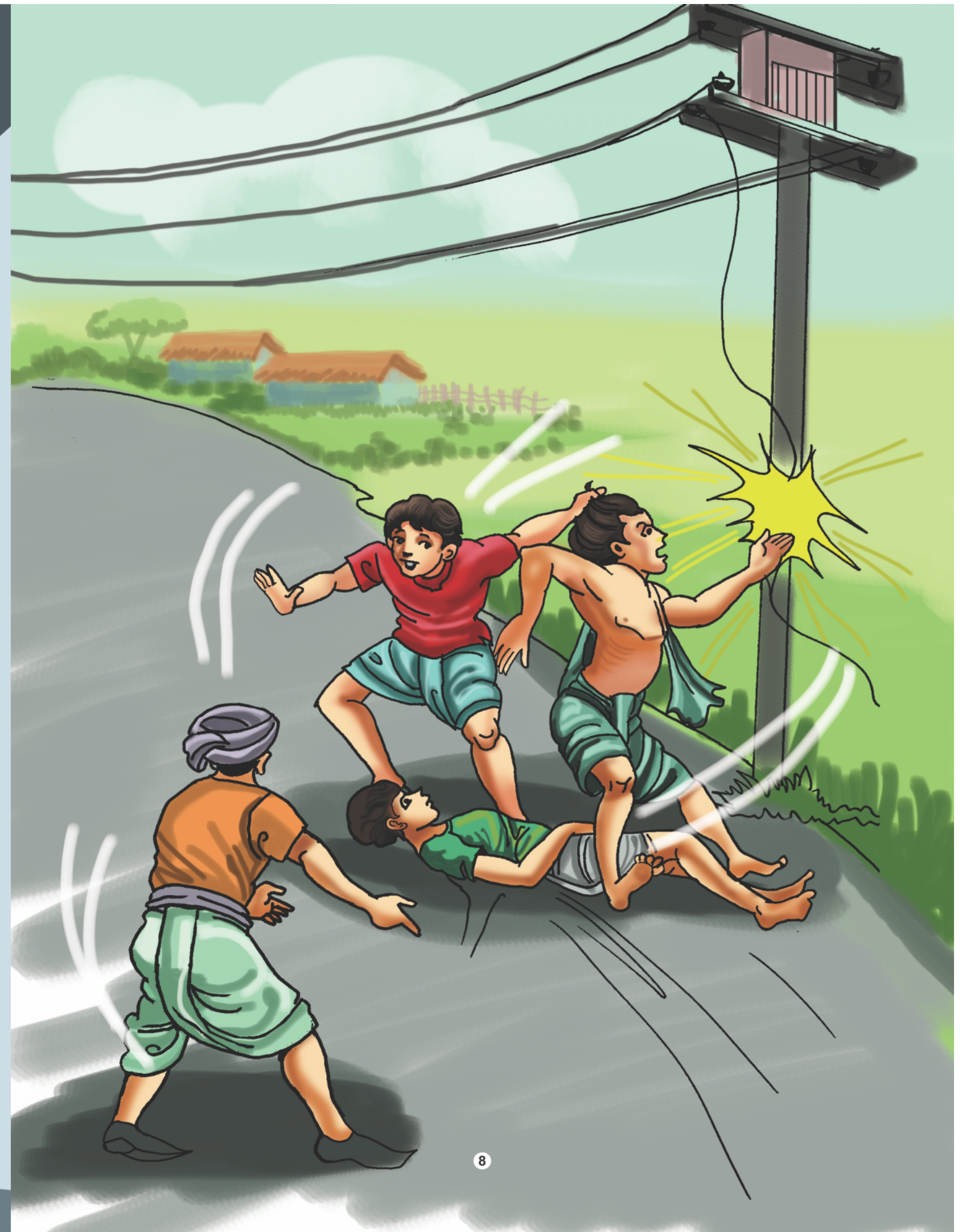
5. 'मेरे दोस्त का घर'

(नितिन फिलीप मेथ्यु)

"यह घर मेरे जिगरी दोस्त का है। मैं इसे जलने कैसे दे सकता हूँ।"

यह कहानी केरल राज्य के एक छोटे से कस्बे में एक सामान्य सी बस्ती में रहने वाले नितिन की है। जितनी छोटी उसकी उम्र थी उससे कहीं ज्यादा उसके हौंसले बुलंद थे। भाईचारा, परोपकार, सेवा व हिम्मत ये सारे सद्गुण ही नितिन की असली दौलत थी। नितिन का सबसे नजदीकी व पक्का दोस्त था एन्थोनी। आर्थिक रूप से सामान्य स्थिति वाले एन्थोनी के पिताजी माईकल की साइकिल की दुकान थी। जो भी थोड़ी बहुत कमाई होती थी उससे पूरा परिवार खुश था। संतोष की ठंडी हवाओं ने कभी अभाव की गर्मी (तपीश) महसूस ही नहीं होने दी। एक सुबह माईकल अपनी पत्नी के साथ चाय पीते हुए अपने छोटे से नये मकान को निहार रहा था। दोनों दम्पती ने मिलकर पैसों की बचत कर-करके आखिरकार अपना खुद का मकान बना ही लिया था। घर चाहे छोटा व अल्प सुविधा वाला क्यों न हो परन्तु मेहनत से बना होने के कारण वो स्वर्ग सा प्रतीत होता था। दोनों की खुशी का पार न था। इतने में एन्थोनी का मित्र नितिन ट्यूशन जाने के लिए वहाँ आ पहुँचा और दम्पती के बचत करने की बात उसने भी सुनी। उसे यह बात बहुत पसंद आई। वह भी बचत करने की सोचने लगा। जब उसने एन्थोनी को आवाज लगाई तो उसकी माताजी सोनीया ने कहा - "बेटा! आज वो तुम्हारे साथ ट्यूशन नहीं आ पायेगा क्योंकि हमको रिश्तेदार के यहाँ जाना है।" नितिन ने कहा - "ठीक है।" और वो चला गया।

ट्यूशन से लौटते वक्त एन्थोनी का घर रास्ते में ही पड़ता था। जैसे ही वो घर के नजदीक पहुँचा कि धड़ाम से जोरदार आवाज हुई। एन्थोनी के घर से गैस का सिलंडर फटने की आवाज थी ये। नितिन ने घर की तरफ देखा, वहाँ आग की लपटें उठ रही थी। नितिन जानता था कि घर पर कोई नहीं है। एन्थोनी की मम्मी ने गैस का स्वीच ऑन छोड़ दिया था। थोड़ी देर में गैस पूरे घर में फैल गई और जैसे ही एक चालू स्वीच के सम्पर्क में आई तो विस्फोट हो गया।

नितिन मदद के लिए जोर-जोर से चिल्लाने लगा। वहाँ पर मुश्किल से 4-5 लोग थे। वो भी इधर-उधर बगलें झांक रहे थे। मदद के लिए आगे नहीं बढ़े। उनमें से एक ने फायर ब्रिगेड को फोन तो कर दिया परन्तु आग उग्र हो रही थी। वो आये तब तक घर बहुत जल जाएगा। नितिन के मन में एन्थोनी के माता-पिता की बातें गूंज रही थी। कितने अरमानों से उन्होंने घर बनाया और अब ये क्या हो गया? बस नितिन एक हीरो की भांति भागा - मन में एक ही बात थी कि - "मुझे अपने दोस्त के घर को बचाना है।" उसने बाल्टी ली और पानी भरकर आग बुझाने में लग गया। बिना थके, बिना रूके पानी डालता गया। इस बीच उसको भी चोट लगी और यहाँ-वहाँ से जल भी गया। परन्तु उसने हिम्मत नहीं छोड़ी, हार नहीं मानी। आखिर उसकी मेहनत रंग लाई। वह लगभग 3/4 आग बुझाने में कामयाब हो गया। फायर ब्रिगेड भी आ गई, बाकी की आग को बुझा दिया गया। सभी ने नितिन के साहस की प्रशंसा की। एन्थोनी के माता-पिता ने देवदूत के रूप में आकर उनके घर को बचाने वाले नितिन को गले लगा लिया। सभी उसका धन्यवाद देने लगे। उसने धीरे से कहा-"मैं अपने दोस्त का घर जलने कैसे देता ?"

अगले दिन अखबार, टी.वी. आदि में नितिन की बहादुरी के किस्से सुर्खियों में थे। उसके साहस को सम्मान देने केन्द्रिय सरकार ने दि. 26 जनवारी 2016 को गणतंत्र दिवस की परेड में बुलाया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने गीता चौपड़ा पुरस्कार से सम्मानित किया।

6. 'हिम्मते मर्दा मददे खुदा'

(साई कृष्ण अखिल किलांबी -अहमदाबाद, गुजरात)

"आफत आई तो
अकेला ही सामना करूँगा।"

साई कृष्ण की उम्र मात्र 14 वर्ष की थी परन्तु उसकी सोच, समझदारी, व्यवहार किसी बड़े से कम न थी। प्यार से सब उसे साई कहकर बुलाते थे। वह अपने दोस्तों के बीच में अपनी बहादुरी के लिए बहुत प्रिय था। एक बार उसके कुछ दोस्तों को एक बदमाश लड़के ने डराया व मारपीट की, तब वे लड़के डरकर भाग खड़े हुए। इस पर साई बड़ा नाराज हुआ। वह बोला - "यदि तुम्हारी जगह मैं होता तो उस बदमाश के छक्के छुड़ा देता, तुम कैसे दोस्त हो जो अपने दोस्त को मार खाता देखकर चुपचाप बैठे हो। कायर कहीं के।" इस बात पर उसके दोस्त ने कहा - "देख साई! कहने में और करने में बड़ा फर्क होता है।" साई ने कहा - "जो मैं कहता हूँ वो करके दिखाता हूँ।" दोस्तों ने कहा - "यह तो वक्त ही बताएगा।"

एक बार की बात है, कड़ाके की सर्दी पड़ रही थी। भरी दोपहर में भी मानों आधी रात का सा सन्नाटा चारों ओर छाया हुआ था। सड़क पर कोई इक्का-दुक्का ही नजर आ रहा था। साई के पापा ऑफिस गए हुए थे और मम्मी घर पर थी। साई घर पर रूम में अपनी पढ़ाई करने में व्यस्त था। अचानक उसे किसी की दर्द में कराहने की आवाज सुनाई दी। उसने मम्मी को आवाज लगाई परन्तु वापस कोई जवाब न आने पर, वह उठकर रसोईघर की ओर गया। परन्तु वहाँ कोई न था और आवाजें फिर भी आ रही थी। वह समझ गया कि ये आवाज माँ की आ रही है। वह दौड़कर सीधा इनवरटर रूम में गया क्योंकि जब करंट गया था तब माँ इनवरटर चालू करने वहाँ गयी थी। उसने देखा कि माँ इनवरटर के करंट की चपेट में आ गई और बुरी तरह से तड़प रही थी। उसी वक्त उसे अपने मित्र से किया हुआ वादा याद आया - "चाहे जैसी भी मुसिबत हो, मैं अकेले ही सामना करूँगा।" उसने मदद माँगने में समय बर्बाद न करते हुए माँ को स्वयं बचाने की सोची। वह तुरंत एक बड़ी सी लकड़ी ले आया और जिस तार से मम्मी उलझी हुई थी उस पर वार करने लगा। थोड़ी ही देर में उसे सफलता मिल गई। उसकी माँ अब तार से अलग होकर निढ़ाल होकर एक तरफ गिर गई। साई ने दौड़कर इनवरटर का स्वीच बंद कर दिया। इनवरटर बंद होते ही घर में अंधेरा छा गया। फिर भी वह दौड़कर पड़ौसी के घर गया और एंबुलेंस बुलवाया। एंबुलेंस आई तब तक साई के पिता भी घटनास्थल पर पहुँच गए। साई की सूझ-बूझ और बहादुरी की वजह से साई की माँ मौत के मुँह में जाने से बच गई। उन्हें नया जीवन मिल गया था। सारी घटना को जानकर सभी ने साई के साहस की खूब प्रशंसा की। मीडिया ने भी साई की बहादुरी को सराहा और प्रचार किया। उसके सभी दोस्तों को भी बहादुरी की प्रेरणा मिली।

साई की बहादुरी का किस्सा जब केन्द्रिय सरकार तक पहुँचा तो उन्होंने उसे गीता चौपड़ा पुरस्कार के लिए आमंत्रित किया। दि. 26 जनवरी 2016 को गणतंत्र दिवस पर देश के प्रधानमंत्री ने सम्मान किया और बहादुर बच्चों के साथ हाथी पर बिठाया। "हिम्मते मर्दा, मददे खुदा।"

7. 'दादी का कमाल'

(रूचिता शिवमपेट -तेलंगाना)

"रुचिता ने दोनों को बचाया,
जैसे ही बस से बाहर कूदी
बस में विस्फोट हो गया।"

यह घटना 24 जुलाई 2015 की है। सुबह का समय था। आठ वर्ष की रूचिता अपने छोटे भाई व बहन को लेकर स्कूल जाने के लिए तैयार थी। इतनी छोटी सी उम्र में भी वह अपने छोटे भाई-बहन की जिम्मेदारी अच्छे से निभाती और उसके हौसले भी बुलंद रहते थे। स्कूल की बस ने जैसे ही हॉर्न बजाया तीनों बस की ओर दौड़े। रूचिता ने पहले उन दोनों को चढ़ाया फिर खुद चढ़ी। बस फर्राटे से सड़क पर दौड़ने लगी। उसकी सूझ-बूझ वाले व्यवहार के कारण सभी उसे दादी माँ कहकर ही बुलाते थे। वह तो बस के ड्राईवर को भी झिड़क देती - "अंकल गाड़ी सामने देखकर चलाइए, गाड़ी चलाते समय बातें करना अच्छी बात नहीं होती।" ड्राइवर हंसकर जवाब देता - "अच्छा दादी माँ, ध्यान रखूँगा।" आगे के रास्ते में रेलवे क्रॉसिंग थी। वहाँ फाटक नहीं था। ड्राइवर अपनी धुन में आगे बढ़ते जा रहा था। वह इस बात से बेखबर था कि ट्रेक पर रेलगाड़ी आ रही है। बस जैसे ही पटरी पर पहुँची, ड्राइवर रेलगाड़ी की सीटी की आवाज सुनते ही घबरा गया। बहुत कोशिश करने पर भी पटरी पर फसी हुई बस को वो आगे-पीछे सरका नहीं पाया। सभी घबराहट व डर के मारे रोने चिल्लाने लगे। रूचिता झट से अपने भाई व बहन को बस से खींचकर बाहर निकालने लगी। भाई तो बाहर आ गया परन्तु बहन भीतर ही रह गई। इतने में ट्रेन का धक्का लगा और बस आगे से चकनाचूर हो गई। सभी बस के पीछे के दरवाजे से उतरने लगे। बस में आग लग चुकी थी। रूचिता ने देखा अभी भी कुछ बच्चे बस में है, वो बस की तरफ दौड़ी और दो बच्चों का हाथ पकड़कर बस से कूदी और थोड़ी दूर सुरक्षित स्थान पर पहुँची। उसी समय जोर से धमाके के साथ बस टूटकर बिखर गई। चारों ओर हा-हाकार मचा हुआ था। एम्बुलेंस आई सभी को अस्पताल ले जाया गया।

सभी ने ऐसी विकट परिस्थिति में भी साहसी व सूझबूझ निड़र रूचिता की खुले दिल से प्रशंसा की। इस दुर्घटना में 15 बच्चे व बस के ड्राइवर व कंडक्टर की मौत हो चुकी थी। और जो बच गए वो सिर्फ रूचिता की बदौलत बच गए। दुर्भाग्यवश रूचिता अपनी छोटी बहन निकिता को नहीं बचा पाई। रूचिता के माता-पिता ने उसे खूब आशीर्वाद दिया। रूचिता की बहादुरी व सेवाभाव से दोनों का सीना फूलकर चौड़ा हो गया।

मीडिया ने खूब प्रचार किया और केन्द्रिय सरकार ने 2016 के गीता चौपड़ा पुरस्कार के लिए रूचिता का नाम भेजा। देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने गणतंत्र दिवस पर उसे पुरस्कार से सम्मानित किया।

8. 'नहले पे दहला'

(दिशांत मेंहदीरता -हरियाणा)

"अंकल मम्मी को मत मारो,
मैं अब नहीं रोऊँगा।"

रविवार का दिन था, स्कूल की छुट्टी थी। हरियाणा के एक गाँव में दिशांत अपने मम्मी-पापा के साथ रहता था। दोपहर का समय था। दिशांत आराम से टी.वी. पर कार्टून देखने लगा। दिशांत की मम्मी भी काम निपटाकर कमरे में आराम करने चली गयी। जाते-जाते दिशांत को टी.वी. बंद करने की हिदायत दी। दिशांत थोड़ी देर में टी.वी बंद करके वहीं सोफे पर सो गया।

गर्मी के दिन थे। दोपहर के समय मानों आसमान से अंगारे बरस रहे थे। सारे लोग अपने-अपने घरों में बैठे थे। पूरे कस्बे में मानों सन्नाटा छाया हुआ था। 2 से 5 बजे तक मानों कर्फ्यू लग गया हो, ऐसी स्थिति थी। तीन बजे के करीब दरवाजे की घंटी बजी। मम्मी ने उठकर दरवाजा खोला तो देखा कि एक बड़ा सा पार्सल लिए हुए एक युवक खड़ा है। मम्मी के पूछने पर युवक ने कहा, आपका Courier है। L.C.D. T.V. है, जो आपके नाम पर है। किसी ने आपको सरप्राईज गिफ्ट भेजा है। इतना कहकर उसने एक गिलास पानी मांगा। मम्मी पानी लेने रसोई में गई इतने में युवक तेजी से मुड़ा और दरवाजा अंदर से बंद कर लिया और मम्मी के गले पर एक बड़ा सा चाकू लगा दिया। दोनों स्तब्ध रह गए। कुछ देर तक समझ ही नहीं आया कि क्या हो रहा है। दिशांत घबराकर रोने लगा तो चोर ने उसे जोर से धमकाया और चुपचाप बैठने के लिए कहा। दिशांत कांपते हुए बोला - "अंकल मेरी मम्मी को मत मारो, मैं अब नहीं रोऊँगा।"

चोर ने गहने और रूपए निकालकर देने को कहा। मम्मी सारे गहने उतार कर देने लगी। और भी माँगने पर मम्मी ने कहा - "मेरे पास इतने ही है।" इस पर चोर ने मम्मी को जोर से मारा। यह देखकर दिशांत दौड़कर चोर के पैरों में गिरकर गिड़गिड़ाने लगा। यही सही मौका जानकर दिशांत ने पूरी ताकत लगाकर चोर के पैर को जोर से खींचा और चोर धड़ाम से नीचे गिर पड़ा। बस अब क्या था, दिशांत ने आव देखा न ताव और चोर की छाती पर चढ़ गया। गजब की हिम्मत आ गई थी उसमें। चोर की जमकर पिटाई की। जोर-जोर से बोलने लगा - "साला गूंडा, तू मेरी माँ को मारेगा। अब तेरी खैर नहीं। तुझे इतना मारूँगा कि अब किसीके घर में घुसने की हिम्मत नहीं करेगा।" इस बीच मम्मी ने चीख-चीख कर लोगों को मदद के लिए इकट्ठा कर लिया। पुलिस भी आ गई।

सभी ने दिशांत व उसकी मम्मी की हिम्मत व बहादुरी की प्रशंसा की, टी.वी., अखबारों में मीडिया ने उनकी तारिफों के पुल बांध दिये।

केन्द्रिय सरकार ने भी दिशांत को उसकी बहादुरी के लिए गीता चौपड़ा पुरस्कार के लिए मनोनीत किया। दि. 26 जनवरी 2016 को हाथी की सवारी का सुंदर अवसर दिया, तथा प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने वीरता पुरस्कार से सम्मानित किया।

9. 'महाभारत का विजेता अर्जुन'

(अर्जुनसिंह -उत्तराखंड)

"God helps those, who help themselves."

उत्तराखंड के सघन वन, जिनको चारों ओर से पर्वत श्रृंखलाओं ने घेर रखा था और इन्हीं पर्वतों की तराई में कल-कल बहती नदी। प्रकृति के इस मनोरम एवं अप्रतिम सौन्दर्य के बीच बसा था एक गाँव। कहानी है इस गाँव के एक वीर एवं साहसी बालक अर्जुन की। काया से दुबले परन्तु मन से मजबूत बालक अर्जुन मात्र 15 वर्ष का था। नवीं कक्षा का छात्र अपना समय व्यर्थ के कामों में न लगाकर अपने पिता के संग खेती के कामों में लगता था। गाँव बिल्कुल जंगल से सटकर होने के कारण यदा कदा वहाँ जंगली जानवर आ जाया करते थे। आंगन में कभी मोर नाचता तो कभी हिरण कुलाचें भरता, कभी सियार दांत दिखाता तो कभी बंदर कूद-फांद मचाता। अर्जुन को इन मूक प्राणियों से बहुत प्रेम था। खरगोश को तो वो बड़े प्यार से अपनी गोद में बिठाकर खाना खिलाता। माँ उसे सदा जंगली जानवरों से दूर रहने व सावधान रहने की हिदायत देती।

एक बार बारिश का मौसम था, अर्जुन घर में बैठा पढ़ाई कर रहा था और माँ गायों को चारा देने घर के बाहर पशुओं के बाड़े में गई। तभी माँ को एक जोरदार गर्जना सुनायी पड़ी। पूरे शरीर में कंपकंपी छूट गई। उसने मुड़कर देखा कि एक खुंखार बाघ उसके पीछे खड़ा है। वह कुछ सोच पाती उससे पहले ही बाघ ने हमला कर दिया। माँ ने बचने का भरसक प्रयत्न किया परन्तु बाघ ने उसके कंधे पर अपना पंजा गाढ़ रखा था। बचना नामुमकिन था। चीख सुनकर अर्जुन दौड़कर बाहर आया। सामने का दृश्य देखते ही सहम गया, मानों काटो तो खून न था। माँ की इस दयनीय स्थिति व पीड़ा को देखकर अर्जुन में न जाने कहाँ से अपार हिम्मत आ गई। वह फुर्ती से उछला और पास ही पड़ी घास काटने वाली दांती ली और बाघ के पीछे दौड़ा। मानों मन ही मन कह रहा हो - छोड़ दो मेरी माँ को, भाग जा वरना तेरी मौत निश्चित है। और उसने हंसिये से वार करना शुरू कर दिया। अचानक हुए इस हमले से बाघ भी असमंजस में पड़ गया। उसने माँ को छोड़ा और अर्जुन पर हमला कर दिया। दोनों गुत्थमगुत्थ हो गए। दोनों लहूलुहान हो गए। हंसिए की चोट से बाघ के शरीर से खून के फव्वारे छूट रहे थे। जैसे-जैसे उसकी पीड़ा बढ़ी, उसकी पकड़ कमजोर होती गई। बिचारा बाघ थक कर दुम दबाकर भाग खड़ा हुआ। अर्जुन पशुओं के बाड़े के बीच एक विजेता की भांति खड़ा था। ऐसा प्रतीत हो रहा था, मानों वह महाभारत का साक्षात् अर्जुन हो। माँ ने उसे गले लगा लिया। "तू तो हकीकत में मेरा टाईगर है, मेरी खातिर तूने अपनी जान जोखिम में डाल दी।" यह कहकर माँ उससे लिपट कर फूट-फूट कर रोने लगी। अगले दिन टी.वी., अखबार में 15 वर्षीय अर्जुन की बहादुरी के चर्चे थे।

उसकी बहादुरी के किस्से सुनकर केन्द्रिय सरकार ने उसका नाम वीरता पुरस्कार के लिए मनोनीत किया। दि. 26 जनवरी 2016 को पूरे सम्मान के साथ हाथी की सवारी करवाई गई और प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने गीता चौपड़ा पुरस्कार अपने हाथों से देकर सम्मानित किया।

10. 'भले ही मैं मर जाऊँ'

(अंजलिका टिनसांग -मेघालय)

"मैं मेरे भाई के लिए
कुछ भी कर सकती हूँ।"

रविवार का दिन था।

सुबह के समय बर्फीली हवाएं चल रही थी। पूरा शहर बर्फ का गोला बना हुआ था। सारे लोग अपनी-अपनी रजाई में दुबककर सो रहे थे। सिर्फ व्यापार करने वाले या नौकरीपेशा लोग ही घरों से बाहर दिखाई पड़ रहे थे। अंजलिका भी अपनी रजाई में दुबकी हुई थी। इतने में माँ ने आवाज दी और फटाफट उठने के लिए कहा। उसे उठाकर माँ अन्य घरेलू कामों में व्यस्त हो गई। इतने में अंजलिका का छोटा भाई अर्जुन जो मात्र सात माह का था, रोने लगा। उसकी रोने की आवाज सुनकर अंजलिका दौड़कर उसके पास गई और उसे चुप कराने लगी। माँ ने पूछा - "इतनी देर से उठा रही हूँ, तब तो नहीं उठी और अब भाई की आवाज सुनकर एकदम से उठ गई।" अंजलिका - "हाँ, माँ! मैं अपने प्रिय भाई को कैसे रोने दे सकती हूँ ?" माँ बेटी के बीच की नोंकझोंक प्राय: रोज का किस्सा था । माँ और पापा को आज कार्यवश बाहर जाना था तो माँ ने उसे कुछ जरूरी हिदायतें दी और भाई का ध्यान रखने को कहा। उनके जाने के बाद अंजलिका कुछ देर अपने भाई के संग खेलने लगी। कुछ देर बाद उसने भाई को पालने में सुलाया और खुद बरामदे में कपड़े सुखाने चली गई। अचानक एक अनहोनी घटित हो गई। टेबलफेन के वायर का एक कोना टूटा हुआ होने से उसमें शोर्ट सर्कीट हो गया और जलता हुआ तार पास पड़े बिस्तर पर गिर पड़ा। धीरे-धीरे बिस्तर ने आग पकड़ ली और वह भड़-भड़ जलने लगा। अंजलिका इन सबसे बेखबर बरामदे में कपड़े सुखा रही थी। थोड़ी ही देर में जब आग ने भयंकर रूप धारण कर लिया, लकड़ी के दरवाजे, सोफा सेट सब जलने से धुंआ बाहर आने लगा। तब जाकर अंजलिका का ध्यान उस पर गया। उसके गले से जोरदार चीख निकली और वो जोर से चिल्लाई - बाप रे! आग । मेरा भाई अंदर है। और वो तेजी से घर के अंदर दौड़ी। उसकी सहेली ने उसे रोकने का जब प्रयास किया तो उसने कहा - "भले ही मैं मर जाऊँ, पर मैं अपने छोटे भाई को जरूर बचाऊँगी।" कोलाहल सुनकर आस-पास के लोग इकट्ठे हो गए। सबके रोकने के बावजूद भी अंजलिका भाई-भाई करते हुए जलते हुए घर में घुस गई। सौभाग्यवश उसके भाई को कुछ नहीं हुआ। आग अभी तक वहाँ नहीं पहुँची थी। उसने दौड़के भाई को पालने से निकाला, गोद में उठाकर उसे चूमा और बाहर की ओर भागी। दरवाजा धूं-धूं करके जल रहा था। अंजलिका ने पास में पड़ी चादर उठायी और अपने भाई को उसमें लपेटा और बाहर दौड़ी। इस बीच उनके माता-पिता भी आ गए। सारा दृश्य देखकर दोनों के होश हवास उड़ गए। एक पल के लिए लगा जैसे घर के साथ-साथ दोनों बच्चों से हाथ धो बैठे। आँखों के आगे अंधियारा छा गया। इतने में सामने से उम्मीद की एक किरण चमकी। अंजलिका अपने भाई को गोद में लिए खड़ी थी। वह खुद यहाँ-वहाँ जगह-जगह से जल गई थी। परंतु इस पर भी उसके मुख पर एक विजेता वाली मुस्कान तैर रही थी। माता-पिता ने दोनों को गले लगा लिया। दोनों की छाती अंजलिका की सूझ-बूझ व बहादुरी को देखकर गर्व से फूल गई थी। सभी की जबान पर अंजलिका के साहस के चर्चे थे। आखिरकार उसने अपने भाई को मौत के मुँह से जो बचा लिया था। मीडिया में भी खूब प्रसिद्धि हुई।

केन्द्रिय सरकार ने भी अंजलिका की साहसभरी कहानी सुनकर दांतों तले ऊंगली दबा ली। उसे सन् 2016 के गीता चौपड़ा वीरता पुरस्कार के लिए मनोनीत किया। दि.: 26 जनवरी की परेड़ में उसे हाथी की सवारी करवायी और स्वयं प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अपने हाथों से उसे पुरस्कृत करके सम्मानित किया।

11. 'चिंता मत करो, तुम सुरक्षित हो'

(मोरिस चेंग ओम)

"बिना सोचे समझे की गई बहादुरी भी मुश्किल पैदा कर सकती है।"

प्रकृति की अमूल्य धरोहर से मालामाल राज्य है 'मणिपुर'। इसी राज्य के एक सुंदर शहर में एक बहादुर बालक मोरिस। मोरिस आठवीं कक्षा का छात्र था और हमेशा अपनी कक्षा में अव्वल आता था।

रविवार का दिन था, हमेशा की तरह शाम की वक्त मोरिस अपने अन्य दोस्तों के साथ बगीचे में खेल रहा था। कुछ ही देर हुई कि एक मित्र बोला - "अरे यार रोज एक ही जगह खेल-खेल कर बोर हो गये हैं, चलो कहीं और खेलते हैं।" इतने में रोडिन बोला - "मुझे एक आइडिया आया है, क्यों न हम सामने की बिल्डिंग बन रही है, उसकी छत पर जाकर खेलें। बड़ा मजा आयेगा। बिल्डिंग में हमें रोकने-टोकने वाला कोई भी नहीं है।" सारे मित्र रोडिन से सहमत थे बस एक को छोड़कर - मोरिस। उसके चेहरे पर चिंता की लकीरें साफ झलक रही थी। उसे एक अनजान खतरे का भय था। उसने कहा - "नहीं, हम यहीं बगीचे में खेल लेते हैं, वहाँ खतरा है। पर बाकी सभी बच्चों को बिल्डिंग में ही खेलना था सो सब उसी ओर चल पड़े। नयी जगह होने से सब रोमांचित थे। बिल्डिंग में कन्स्ट्रक्शन का काम चालू होने से कहीं ईंटों का ढ़ेर पड़ा था तो कहीं रेत का ढ़ेर था। कहीं सिमेंट की बोरियाँ पड़ी थी तो कहीं लकड़ियों का ढ़ेर था। सारे बच्चे लुका-छिपी का खेल खेलने लगे। रोडिन दौड़ता-दौड़ता छत के किनारे पर बनी पानी की टंकी के पीछे छुप गया। वह इस खतरे से अनजान था कि वहीं नजदीक से बिजली का नंगा तार गुजर रहा था। स्वयं को छुपाने की कोशिश में अचानक उसका हाथ नंगे तार को छू गया। करंट के भयानक झटके के लगने से उसके मुँह से चीख निकल गयी और वो तड़पने लगा। खेल में मशगुल होने के कारण किसी का ध्यान उसकी ओर नहीं गया। अचानक मोरिस की नजर उस पर पड़ी। जैसे ही उसने रोडिन का हाथ पकड़ना चाहा उसे भी करंट का झकटा लगा और वो दूर जा गिरा। अब वो अन्य उपाय सोचने लगा। उसने पास में पड़ी टूटी कुर्सी की लकड़ी उठाई और रोडिन का हाथ तार से छुड़ाने लगा। मोरिस अपनी कोशिश में कामयाब रहा। उसने रोडिन को गले लगा कर कहा - "चिंता मत करो दोस्त, अब तुम सुरक्षित हो।" उसे हाथोंहाथ अस्पताल ले जाया गया। मोरिस अपनी सूझबूझ व बहादुरी के कारण सबका हीरो बन गया था। रोडिन के माता-पिता ने आभार व्यक्त किया। मोरिस ने न सिर्फ रोडिन की बल्कि अपनी बुद्धिमानी से बाकी बच्चों की भी जान बचाई थी।

उसके इस पराक्रम को दि. 26 जनवरी 2016 के गणतंत्र दिवस समारोह पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के हाथों गीता चौपड़ा पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

12. 'तोपो से सलामी दी'

(शेरथा का शूरवीर मुकुंद)

''मुकुंद शहीद हो गया।''

शेरथा गाँव में आज भीड़ लगी थी। समाचार था कि मुकुंद शहीद हो गया है। और आज उसे लाया जा रहा है। वही मुकुंद जो बचपन में पुलिस की वर्दी को देखकर छुप जाता था। उसके पिता श्री नटवरलाल दीक्षित सदैव उसे निडरता की प्रेरणा देते थे। उम्र के साथ-साथ डर का स्थान निर्भयता ने ले लिया। तो सेना में भर्ती हो गया। बी.एस.एफ में चयन होते ही पहली पोस्टिंग पंजाब में हुई।

अमृतसर के वरिश्ठ ऑफिसर श्री भूल्लर साहब को समाचार मिले की प्रीतमसिंह के फॉर्म हाऊस में आतंकवादी छिपे हैं। मुकुंद ने पहली ही बार में अपनी बहादुरी का कारनामा कर दिखाया। आतंकवादियों को मुँह की खानी पड़ी। पंजाब सरकार ने सम्मानित किया और उसको लांस नायक बना दिया।

अब मुकुंद के सामने कश्मीर के आतंकवादी प्रतिपक्षी के रूप में खड़े थे। बारामुल्ला जिला के कुपवाड़ा ग्राम में मुकुंद की टोली को तैनात किया गया।

पंजाब के कारनामों के किस्से सुन कश्मीर के आतंकवादी भी मुकुंद से घबराते थे। आतंकियों ने पूरी छावनी को ही उड़ाने की योजना बना डाली। अक्टूबर 26 को छावनी पर हमला हुआ। मुकुंद ने सैनिकों से कहा - ''तुम अंदर रहकर दुश्मनों का सामना करो। मैं बाहर जाकर उन्हें धूल चटाता हूँ।'' एक दो नहीं पूरे आठ आतंकियों को मार गिराया। इसी दौरान एक छनछनाती हुई गोली उसकी तरफ आई। गोली से बचने के लिए जैसे ही मुकुंद ने अपना पैर बढ़ाया, फिसलन होने से वह गिर पड़ा और लुढ़कने लगा। उसी समय आतंकियों ने अच्छा मौका जानकर उस पर गोलियों की बौछार कर दी। वीर मुकुंद शहीद हो गया।

पूरा शेरथा गाँव जनमेदनी से भर गया। सैनिकों ने मुकुंद को गगनभेदी तोपों की गर्जना से सलामी दी। सभी ने ''मुकुंद अमर रहे'' के नारे लगाये। देश के लिए ''अमर जवान'' बने मुकुंद को सभी ने भावभीनी श्रद्धांजलि दी।

13. 'सबसे महंगी जमीन'

(बहादुर जोरावरसिंह और फतेहसिंह)

"देश के लिये शहीद होने से बड़ी गौरव की बात क्या ?"

मुगल सेना ने आनंदपुर के किले को घेर लिया था । गुरु गोविन्द सिंह को किला छोड़ने की सलाह दी गयी। एक रात गुरु गोविन्द सिंह की माताजी, पत्नी व चार पुत्रों को किले से बाहर भगाने का कार्य चल रहा था कि तभी मुगलों को इसकी भनक लग गई। वे उन्हें मारने पीछे दौड़े। इस दौरान गुरु के कुटुंब के दो भाग हो गए।

पहले भाग में गुरु और उनके दो बड़े पुत्रों ने चमकोर के पुराने किले में आश्रय लिया और दूसरे भाग में माता, पत्नी व नौ वर्षीय जोरावरसिंह और सात वर्षीय फतेहसिंह थे। गुरु माता के पास कुटुंब के गहनों की पोटली थी। रसोइया जो उनके साथ था उसकी नियत गहने देखकर बिगड़ गई। उसने धोखे से सभी को नवाब के हवाले कर दिया। नवाब ने सभी को मुस्लिम धर्म अपनाने के लिए बाध्य किया। परन्तु सबका एक ही जवाब था कि हमारे पूर्वजों ने धर्म की रक्षा के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिये तो हम कैसे पीछे रह सकते हैं। नवाब की हर कोशिश जब नाकामयाब रही तो उसने उन दोनों पुत्रों को जिन्दा दीवार में चुनवाने का आदेश दे दिया। काजी ने जब आखरी कोशिश की तो दोनों बच्चे शेर की तरह दहाड़े और कहा - वे कायर होते हैं, जो अपने जीवन के लिए धर्म को दाँव पर लगा दें। हम कायर नहीं है। दीवार चुनते-चुनते जब छोटे भाई के गले तक आ गई तब बड़ा भाई जोरावर सिंह रोने लगा। नवाब ने उसे मौत से डरा हुआ जानकर पूछा - "क्यों डर गए, तुम धर्म बदलने को तैयार हो ?" जवाब मिला - "मैं मौत के डर से नहीं रो रहा हूँ। मैं तो इसलिए रो रहा हूँ कि देश और धर्म की खातिर बलिदान होने का स्वर्णिम अवसर मुझसे पहले मेरे छोटे भाई को मिल रहा है। मुझे यह अवसर थोड़ी देर से मिलेगा इसलिए रो रहा हूँ।" दीवार की आखरी ईंट रखते ही दोनों भाई शेर की तरह दहाड़ कर बोले - "सतश्रीअकाल जो बोले सो निहाल।" इतना कहकर दोनों भाई वीरगती को प्राप्त हो गए।

छोटी सी उम्र में किए गए इस बड़े बलिदान की गौरवगाथा इतिहास के पन्नों में अमर हो गई।

यहाँ पर यह दर्शाना उचित होगा कि जिस भूमि पर जोरावसिंह और फतेहसिंह को चुनवाया गया, वह जमीन दीवान टोडरमलजी ने नवाब वजीरखान से उन दोनों बच्चों के दाह संस्कार के लिए खरीद ली। यह दुनिया की सबसे महंगी जमीन कही जाती है क्योंकि वजीरखान ने इसकी किंमत जमीन पर सोने की मोहरें बिछाकर भरने की रखी थी। यह था टोडरमलजी का गुरु प्रेम।
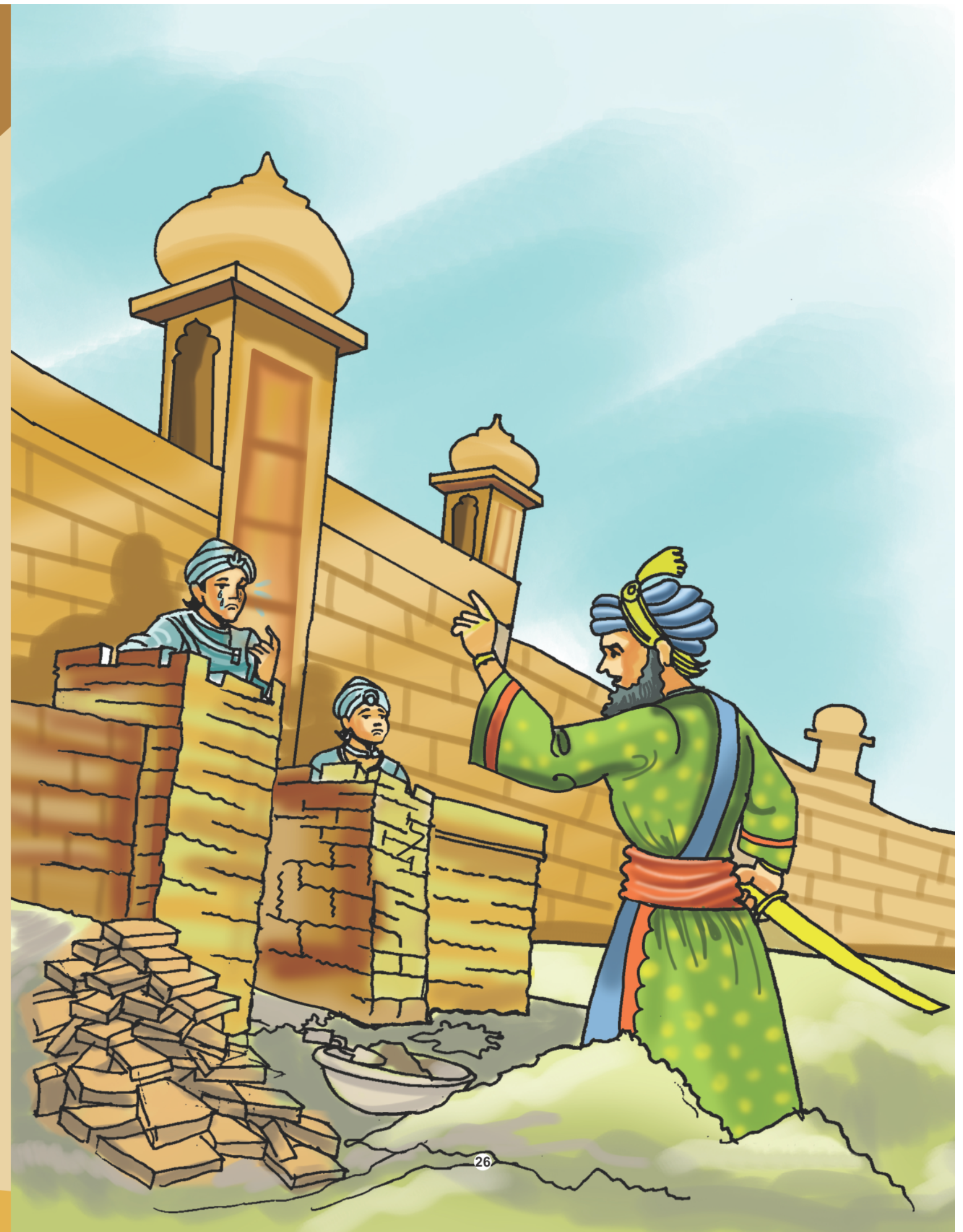
14. 'बलिदान का इतिहास'

(बहादुर बादल)

चारों ओर से हजारों मुसलमान से घिरे एक किशोर, दोनों हाथों से तलवार चलाते हुए दुर्ग के नजदीक पहुँच गया। दुर्ग पर तैनात सैनिकों को संबोधित करते हुए कहा - ''बहादुर सैनिकों तैयार हो जाओ।''

यह आवाज सुनते ही किले में तैनात सारे सैनिक सावधान हो गए। सभी सैनिकों ने केसरिया पहन लिया। राजपुतानियों ने हजार मन लकड़ी इकट्ठी कर एक बड़े खड्डे में भर दी और उसमें आग लगा दी।

यह रोमांचक, हृदय को दहला देने वाला दृश्य था चित्तौड़ का। चित्तौड़ की गद्दी पर राणा रतनसिंह विराजमान थे। उनकी रानी पद्मिनी अनुपम सौन्दर्य की स्वामिनी थी। उसके सौन्दर्य की चर्चा देश विदेश में फैली थी। दिल्ली के बादशाह अल्लाउद्दिन खिलजी ने भी रानी पद्मीनी के सौन्दर्य की प्रशंसा सुनी, उसे पाने के लिए लालायित होने लगा। वह बीस हजार सैनिकों के दल को लेकर चित्तौड़ के किले पर धावा बोलने चल पड़ा। पूरे बारह महीने तक वह चित्तौड़ के किले के बाहर छावनी डालकर रहा। अपनी दाल गलती हुई न जानकर अल्लाउद्दिन ने एक चाल चली। उसने राणा को संदेश भेजा कि मुझे रानी पद्मीनी का चेहरा मात्र दर्पण में दिखा दो, मैं चला जाऊँगा। राणा ने सोचा यदि इतना करने मात्र से हजारों का रक्तपात रूक जाए तो हर्ज ही क्या है। राणा ने बादशाह की बात स्वीकार कर ली। सारे इंतजाम कर दिए गए। जब बादशाह पद्मीनी का चेहरा देखकर वापस जा रहा था तो भारतीय संस्कृति का निर्वाह करते हुए राणा उसे छोड़ने किले के दरवाजे तक गया। जैसे ही दरवाजे के पास पहुँचा बादशाह के रचे षड़यंत्र के अनुसार उसके सैनिकों ने राणा को बंदी बना लिया। यह समाचार मिलते ही किले में हा-हाकार मच गया। बादशाह की सेना के आगे राणा की सेना अल्प थी। सीधा संग्राम संभव ही नहीं था। रानी पद्मीनी ने मामा गोरा सरदार के साथ एक योजना बनायी। उसने बादशाह को संदेश भेजा कि यदि वो राणा को छोड़ दे तो रानी पद्मीनी बादशाह के पास आने को तैयार है। रानी के साथ सात सौ दासियाँ भी आयेगी।

बादशाह ने अपनी योजना सफल हुई जानकर सहर्ष स्वीकृति दे दी। शाम को किले के भीतर से एक के बाद एक सात सौ पालकियाँ बाहर आयी। पद्मीनी के वेष में उसीका भाणेज था। रानी पद्मीनी राणा से मिलने गई जब उसके दो लुहारों ने राणा की बेड़ियाँ तोड़ दी और शेष पालकियों में छिपे सैनिक बादशाह के जश्न में डूबे सैनिकों पर टूट पड़े। सरदार गोरा और बादल ने दुश्मन के छक्के छुडा दिये। आधी दुश्मन सेना को उन्होंने खत्म कर दिया था। थके हुए सरदार गोरा पर दस यवनों ने एक साथ हमला बोल दिया। दुश्मन के इस प्रहार से गोरा वीरगति को प्राप्त हो गए। उधर बादशाह किले में जाकर रानी को उठाने पहुँचा। पर बादल ने अपने पराक्रम से उसकी योजना सफल नहीं होने दी। भारी मात्रा में दुश्मन सैनिकों के आगे अब चित्तौड़ की सेना कम पड़ रही थी। सारे सैनिक जान लगाकर लड़ रहे थे। उधर रानी पद्मीनी ने किले में मौजूद प्रत्येक औरत के साथ अग्निकुंड में कूदकर जौहर कर लिया। जब तक राणा का एक भी सैनिक जिंदा था बादशाह का एक भी सैनिक किले में प्रवेश नहीं पा सका।

विजय के मद में बादशाह ने जैसे ही दुर्ग में प्रवेश किया, रानी पद्मीनी के साथ सभी औरतों को जलकर राख होते हुए देखकर हैरान रह गया। बहादुर बादल ने अपनी अंतिम सांस तक मुगलों को किले में पैर नहीं रखने दिया। उसने अपनी स्वामीभक्ति व बहादुरी से अपना नाम अमर कर दिया। बलिदान का ऐसा इतिहास रच डाला कि आनेवाली पीढ़ियाँ जब-जब उनके किस्से सुनेगी तब-तब उनका भी पौरूष जाग उठेगा।

15. 'अबे ओ अंग्रेज की औलाद'

(बहादुर सुभाष)

''आजाद हिंद फौज के संस्थापक''

पाँच वर्ष के सुभाष को अंग्रेजी स्कूल में पढ़ने भेजा गया। उस अंग्रेजी शाला में अंग्रेजी बालकों के साथ-साथ बंगाली बालक भी पढ़ते थे। अंग्रेजी बालक बिना बात बंगाली बालकों का अपमान करने का कोई मौका नहीं चूकते थे। कभी कालिया कहकर चिढ़ाते तो कभी पानी तक पीने नहीं देते। नाक में दम कर रखा था। परन्तु विरोध करने की हिम्मत किसी की नहीं होती थी। सभी बंगाली विद्यार्थी मन मारकर तिरस्कार का घूंट पीकर चुपचाप बैठ जाते थे।

एक बालक था जिसका खून इन सारी बातों से खौल उठता था। स्वाभिमान पर लगी हर चोट उसके भीतर एक ज्वाला उत्पन्न करती थी। वह प्रत्येक अपमान का बदला लेना चाहता था। एक बार सभी खेल रहे थे। तभी एक अंग्रेज विद्यार्थी ने कहा - ''ये भारतीय बड़े नीच होते हैं।'' ये कहकर एक ने दूसरे बंगाली लड़के के सर पर ठोका। सभी मन ही मन में गुस्से हो रहे थे परन्तु किसी ने विरोध नहीं किया। सुभाष सब को देख रहा था। अब उसकी सहनशक्ति जवाब दे गई थी। वह जोर से दहाडा - ''अबे ओ अंग्रेज की औलाद, हिम्मत है तो मेरे सामने आ।'' इतना कहकर वो अंग्रेज बालकों पर टूट पड़ा। सारे अंग्रेज विद्यार्थी सुभाष का यह रौद्र रूप देखकर घबराकर दुम दबाकर भाग खड़े हुए। और भविष्य में वापस किसी का अपमान करने की जुर्रत नहीं की।

यही बालक सुभाष आगे चलकर सुभाषचंद्र बोस कहलाया। जो आजाद हिंद फौज के संस्थापक एवं सेनापति थे।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में सुभाष चंद्र बोस ने मुख्य भूमिका निभाई। ''तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा।'' ये आपका मुख्य नारा था।

जरा सोचिए

1) प्रिय बच्चों, क्या मौके पे आप भी अपने परिवार मित्र और समाज के लोगों के हित में बहादुरी दिखाओगे ? यदि ऐसी कोई घटना आपके जीवन में घटी हैं तो हमें सूचित करें।

2) क्या आप देश के दुश्मनों से डरे बिना उनके खिलाफ बहादुरी का प्रदर्शन करोगे ?

3) क्या आप निडर होके अन्याय के विरुद्ध लड़ोगे ?

4) क्या आपके जीवन में ऐसी परिस्थिति आए तो आप बहादुरी दिखाओगे?

5) यदि आपके जीवन में ऐसी कोई घटना घटी हो, तो आप हमें लिख कर भेजिए।

What's App Number : 98244 44431, 93765 40599, 9998821990

16. 'अपनी जुबान को लगाम दे'

(बहादुर छत्रसाल)

बहादुर कुमार छत्रसाल के एक हाथ में खून सनी तलवार थी और दूसरे हाथ में फूल भरी छाब। ऐसा अद्भुत नजारा देखने वालों ने दांतों तले उंगलियां दबा ली। यह वीर बालक छत्रसाल पन्ना नरेश महाराज चंपतराय का पुत्र था। पिता के ही समान स्वाभिमानी व बहादुर था। परन्तु दुर्भाग्यवश छोटी सी मात्र सात वर्ष की ही उम्र में उसके सर से पिता का साया उठ गया था।

बात उन दिनों की है जब दिल्ली में बादशाह औरंगजेब का शासन चल रहा था। ऐसा शासक जिसने अन्याय व अनीति की सारी सीमाओं को लाँघ दिया था। हिन्दुओं का वह कट्टर विरोधी था। हिन्दुओं के दिलौ दिमाग व जीवन में अपना आतंक फैलाने का कोई मौका वह नहीं चूकता था। इसी वजह से अधिकांश हिन्दु उससे आतंकित रहते थे।

आज विंध्यावासिनी देवी के मंदिर में मेला था। बालक छत्रसाल भी अपने पूरे राजपरिवार के साथ देवी के दर्शन व पूजा हेतु मंदिर गया था। पूजा के लिए फूल लेने के लिए वो अपने बाल मित्रों के संग पुष्पवाटिका में गया। सभी बालक अपनी-अपनी पसंद के फूल चुन-चुन कर अपनी-अपनी छाब में रख रहे थे। वे अपना काम कर रहे थे कि अचानक 4-5 घुड़सवार उनके सामने आकर के रूके और उनके सरदार ने पूछा - "क्या देवी के मंदिर में कोई मेला है ?" सभी बच्चों ने एक साथ जवाब दिया - "हाँ, है ना आज मेला। आज सभी लोग देवी के दर्शन व पूजा करने आएँगे।" सरदार ने पूछा, "कौनसी देवी का मंदिर है यह ?" बच्चों ने बड़ी श्रद्धा से कहा - "ये मंदिर हमारी देवी विंध्यावासिनी माँ का है। क्या आपको भी दर्शन करने जाना है?" यह सुनकर वह यवन सरदार ठहाके लगाकर हँसने लगा। उसने सीना तानकर मूँछों पर ताव देते हुए कहा - हम तो ये मंदिर तोड़ने आए हैं। यह सुनते ही बालक छत्रसाल का चेहरा लाल होकर तमतमाने लगा। उसने जोर की दहाड़ लगाई - "अरे ओ नास्तिक, अपनी जुबान को लगाम दे वरना मैं तेरा मुँह तोड़ दूंगा।" सरदार ने बालक को छोटा जानकर मखौल उड़ाते हुए कहा - "तेरी औकात ही क्या है, छोकरे, पिद्दी भर का तो है तू। तू और तेरी देवी मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। छत्रसाल के सर पर मानों खून सा सवार हो गया। वह बिना डरे जोर से बोला - "अरे ओ यवन ! तुझे देखना है ना मुझमें कितना दम है, तो आ।" इतना कहकर उसने अपनी कमर पर लटकी म्यान से चमचमाती हुई तलवार निकाली और उसके सीने में भोंक दी। वह यवन हतप्रभ रह गया। उसने एक छोटे से बालक के द्वारा इस दांते के हमले की कल्पना भी न की थी। उस नन्हें से दिखने वाले बालक की भुजाओं में इतना दम था कि तलवार उस यवन के सीने के आर-पार निकल गई। छत्रसाल को देख उसके बाकी के साथियों ने भी अपनी मातृभूमि व संस्कृति की रक्षा के लिए अपनी-अपनी तलवारें निकाल ली। बच्चों की आँखों में चमकता शौर्य देखकर बाकी के यवन सैनिक घबरा गए और दुम दबाकर वहाँ से भाग खड़े हुए।

पुष्पवाटिका में हुए इस घटना की खबर चारों ओर फैल गई। खबर सुनते ही सुजानराव सैनिकों के साथ वहाँ आ पहुँचा। सामने से सीना ताने आँखों में विजय की चमक लिए हुए बालक छत्रसाल को खून सनी तलवार के साथ आते हुए देखकर उनका मन शांत हुआ। पूरी घटना विदित होने पर सुजानराव ने वीर बालक छत्रसाल को गले लगाकर खूब शाबाशी दी।

17. 'काका की लाश'

(बहादुर रामसिंह)

वीर अमरसिंह को धोखे व दगाबाजी से मरवाने के बाद बादशाह शाहजहाँ ने उसकी लाश को कौओं और गिद्धों के द्वारा नोचे जाने के लिए किले के बूर्ज पर फिंकवा दिया। ऐसा करके उसने अपनी नीचता का परिचय दिया।

अमरसिंह की रानी ने वहाँ के सरदारों से अपने पति की लाश वापस लिवाने की विनती की परन्तु बादशाह से शत्रुता मोल लेने एक भी सरदार तैयार नहीं हुआ। तब रानी ने यह बीड़ा स्वयं उठाने की सोची। अमरसिंह के भतीजे रामसिंह को जैसे ही इस घटना का पता चला वो घोड़े पर सवार हो, हाथों में नंगी तलवार लिए दौड़ा चला आया। उसने हाथ जोड़ कर अपनी काकी से कहा -"काकी, आप मुझे जाने की आज्ञा दो। या तो मैं काका की लाश वापस लाऊँगा या फिर वहीं पर मैं भी शहीद हो जाऊँगा।"

अमरसिंह की वीरता का यश चहुँ दिशाओं में फैला था। वह भी बादशाह के दरबार में ऊँचे दर्जे पर था। एक बार बादशाह के साले ने अमरसिंह का भरे दरबार में अपमान कर दिया। अमरसिंह ने उसी समय आव देखा न ताव उसका सर वहीं धड़ से अलग कर दिया। इसी बात का बदला लेने बादशाह ने अमरसिंह को धोखे से मरवाकर किले के बुर्ज पर फिंकवा दिया था।रामसिंह की रगों में भी अमरसिंह का ही खून था। वह घोड़े को एड़ी मारकर बादशाह के किले में घुस गया। यवन के सैनिकों ने उसे चारों ओर से घेर लिया। रामसिंह के चेहरे पर एक शिकन तक न आई। वो दोनों हाथों में तलवार लिए विद्युत गति से उन पर टूट पड़ा। सारे सैनिकों को मौत की नींद सुलाकर वो किले की बुर्ज पर चढ़ गया और वहाँ से अपने काका की लाश को कंधे पर उठा लिया। एक हाथ से काका की लाश को पकड़ा था और दूसरे हाथ में नंगी तलवार थी। यवन उस तक पहुँच पाते उससे पहले ही वो अपने काका को लेकर घोड़े पर चढ़ गया। और घोड़े को महल के बाहर की तरफ दौड़ाने लगा। मुँह से घोड़े की लगाम थामे वो लगातार यवनों से युद्ध करते-करते आगे बढ़ रहा था। आखिरकार वो कामयाब हुआ। दूर से आते हुए रामसिंह को अपने काका की लाश को कंधे पर लादे आता हुआ देखकर रानी की आँखें छलछला गई। उसने कहा -"बेटा रामसिंह! जो काम बड़े-बड़े सरदार न कर सके वो तुमने कर दिखाया। तुमने मेरी लाज रख ली। इतिहास में तुम्हारा नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा जाएगा। सब तुम्हारी गौरवगाथा गाते हुए कहेंगे कि जो काम बड़े-बड़े तीसमारखाँ नहीं कर सके वो एक बालक ने कर दिखाया है।"
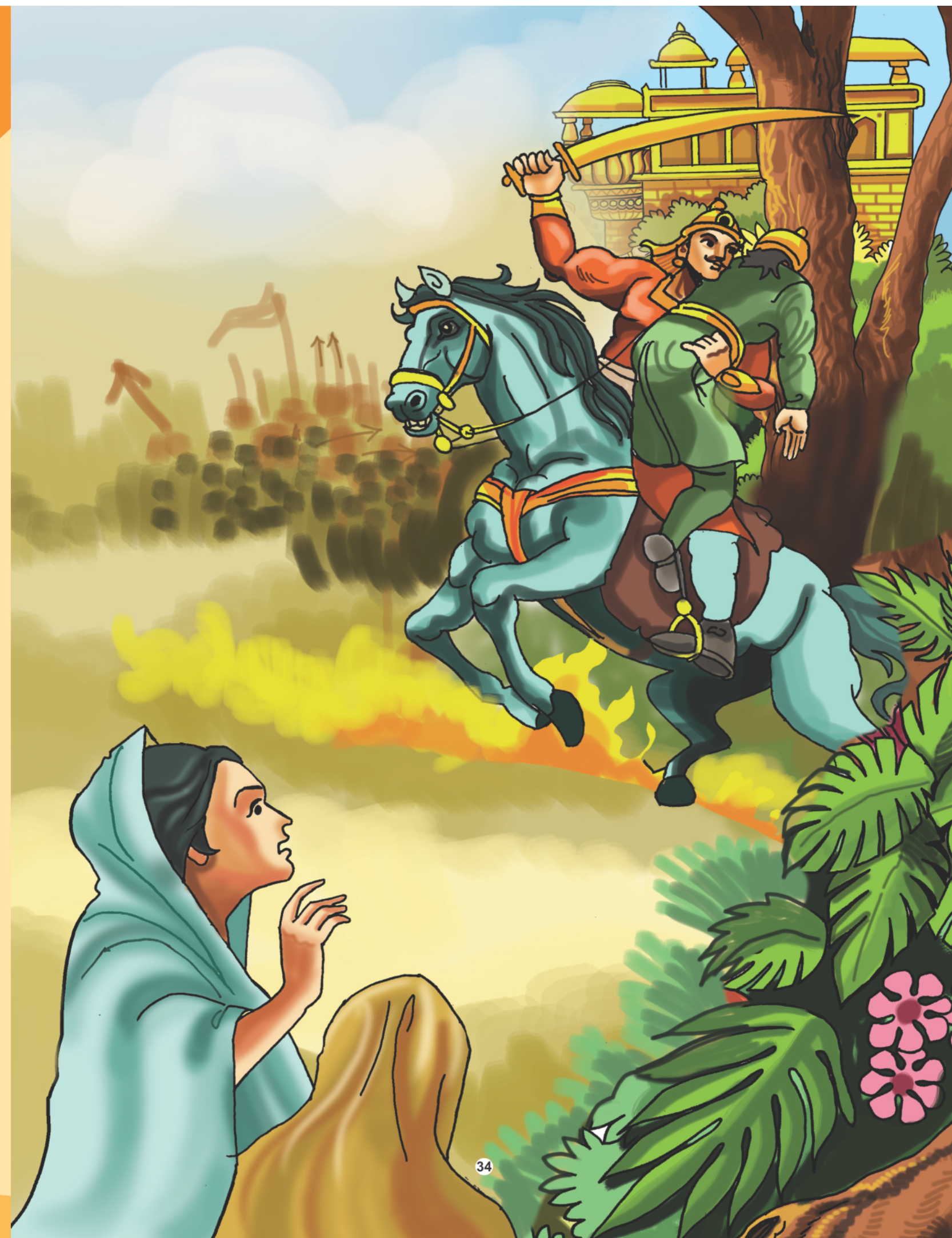
18. 'शास्त्र से नहीं संगीत से'

(संगीत प्रेमी बहादुर प्रताप)

''देश से उपर कोई नहीं''

राजस्थान रणभूमि कहलाता है। यहाँ पर जन्म लेने वाले हर एक बालक को बचपन से ही अस्त्र-शस्त्र का प्रशिक्षण दिया जाता है। 10-12 वर्ष की उम्र में तो वो तीर, तलवार, भाला आदि युद्ध कलाओं में पारंगत हो जाता था। एक घटना ने पूरे चित्तौड़ के राजपुतों को अचरज में डाल दिया था।

बात उस समय की है जब चित्तौड़ का राज सिंहासन महाराणा प्रताप से सुशोभित होता था। और दिल्ली की गद्दी पर बादशाह अकबर राज करता था। मुगल बादशाह की आँखों में चित्तौड़ की शानोशौकत कांटे की तरह चुभती थी। चित्तौड़ की स्वतन्त्रता उससे बर्दाश्त नहीं होती थी इसलिए वो हमेशा चित्तौड़ को बंदी बनाने के मनसुबे बनाता रहता था। चित्तौड़ की जनता इससे बेखबर न थी इसलिए चित्तौड़ की रक्षा के लिये राजपुत बालक सभी युद्ध की तालीम लेकर सेना में भर्ती हो जाते थे।

परन्तु एक 10-12 वर्षीय बालक था प्रताप। वह शस्त्रों को छूता भी न था। जब कोई उसे टोकता तो वो कहता - ''मैं युद्ध को शस्त्र से नहीं संगीत से जीतकर बताऊँगा।'' प्रताप को बचपन से ही गाने बजाने का शौक था। पूरे दिन सितार लेकर रियाज किया करता था। उसके माता-पिता व मित्र सभी उस पर हंसते थे।

एक बार मुगल बादशाह अकबर ने चित्तौड़ को चारों ओर से घेर लिया। मातृभूमि की रक्षा करने का व ऋण चुकाने का सुअवसर मिला था राजपुतों को। प्रताप ने भी इस मुहीम में अपना योगदान देने की ठान ली थी। प्रताप आस-पास की बस्ती में जाकर संगीत के माध्यम से लोगों में वीरता जगाने लगा।

''चलो-चलो वीरों, देश ने पुकारा है।

मातृभूमि की आण खतरे में पड़ी है। हमें उसे बचाना है।''

प्रताप के इन प्रेरणा भरे गीतों ने लोगों पर जादुई असर किया। तरुण जवान फटाफट सेना में जुड़ने लगे। शीघ्र ही महाराणा प्रताप की सेना की संख्या दुगुनी हो गई। प्रताप निरंतर वीररस भरता रहता था। एक बार प्रताप इसी प्रकार जब गीत गा-गा कर लोगों में उत्साह भर रहा था तब मुगल सैनिकों ने उसे पकड़ लिया और

उसे अपने गाने के माध्यम से चित्तौड़ के द्वार खुलवाने के लिए बाध्य करने लगे।

उस रात मुगल बादशाह ने चित्तौड़ पर हमला करने के लिए दुगुनी सेना लेकर हमला कर दिया। प्रताप को भी अपने साथ ले लिया। प्रताप ने खतरा भांप लिया। उसने भी मुगलों को झांसे में लेते हुए कहा - ''हुजूर ! हम तो गाने-बजानेवाले गायक हैं। गाना गाकर अपना पेट भरते हैं। आप जो कहेंगे वो गा लेंगे।'' सेनापति ने कड़क हिदायत देते हुए कहा - ''तुम गा सकते हो परन्तु यदि कुछ भी गड़बड़ की तो सर धड़ से अलग कर दिया जायेगा।''

प्रताप मुगल सेना के बीच जाकर सितार पर एक धुन बजाने लगा। प्रताप की बजाई जानेवाली धुन को राजपूत सेना ने पहचान लिया। प्रताप ने अपनी धुन व गाने के माध्यम से राजपूतों को यह संदेश दिया कि - सावधान हो जाओ, दुश्मन सेना दरवाजे पर खड़ी है। शत्रुओं का सामना करो। यह सुनकर किले के भीतर से तीर और गोलों की बौछार होने लगी। मुगल सैनिक धड़ाधड़ जमीन पर गिरने लगे। सेनापति घबरा गया गुस्से से उसने प्रताप के हाथ से सितार छीनकर पूछा - ''तुम क्या बजा रहे हो ?'' प्रताप की आँखों में मातृभूमि की भक्ति की चमक थी। उसने निडरता से जवाब दिया - ''मैंने अपने गीत व संगीत के माध्यम से अपनी सेना को सचेत कर दिया। उन्हें सावधान कर दिया कि किले के दरवाजे मत खोलना, दुश्मन सेना बाहर खड़ी है। दुश्मन को मार भगाओ।'' सेनापति का क्रोध सातवें आसमान पर था। उसने तलवार निकाली और एक ही झटके में प्रताप का सर धड़ से अलग कर दिया। मुगल सेनापति अपने आधे से ज्यादा सैनिकों को खोकर निराश होकर छावनी में चला गया।

बहादुर प्रताप ने यह साबित कर दिया कि देश सेवा सिर्फ शस्त्र से ही नहीं संगीत से भी की जा सकती है। महाराणा प्रताप ने स्वयं प्रताप का अग्नि संस्कार करके श्रद्धांजलि अर्पित की।

19. 'अकेली छोड़कर नहीं जाऊँगा'

(बहादुर बालक)

''माँ तो माँ होती है''

रामपुर गाँव आज गमगीन था, गाँव में शमशान जैसा सन्नाटा छाया हुआ था। क्योंकि नामचीन डाकू सुमेरसिंह आज गाँव पर हमला करने वाला था। डाकू सुमेरसिंह खूंखार, क्रूर व जुल्मी था इसीलिए गाँव में कोई उसका सामना करने की हिम्मत नहीं कर पाता। पूरा प्रदेश उसके खौफ से आतंकित रहता था। इसीलिए जब भी डाकूओं की टोली गाँव में आती थी तब सारे लोग अपने-अपने घरों में दीपक बुझा दिया करते थे। डाकू अंधेरा होने से हाथों में मशाल लेकर के आये थे। वो उसी मशाल से गाँव के घरों में आग लगाने वाले थे। उसी वक्त सुमेरसिंह आया और कहने लगा - ''रूको! मुझे एक घर में दिया जलता दिखाई दे रहा है। देखूँ तो जरा, कौन है जिसे मेरा खौफ नहीं ? कौन है जो मेरे होते हुए अपने घर को रोशन कर रहा है ? वह उस गरीब के झोंपड़े के दरवाजे के नजदीक पहुँचकर खड़ा हो गया। उसने झाँक कर अन्दर देखा - ''वहाँ पर एक टूटी खाट पर एक वृद्धा दर्द से कराह रही थी, वहीं एक दस साल का बच्चा बैठा था। डाकू के आने की आहट सुनकर वृद्धा घबरा गई। उसने अपने बेटे से कहा - ''बेटा ! तुम भी जान बचाकर गाँव से बाहर भाग जाओ। वरना डाकू तुझे गोली मार देंगे।'' बेटे ने माँ का हाथ पकड़कर कहा - ''माँ आपने कड़ी मेहनत करके पाई-पाई जोड़कर बड़ी मुश्किल से मुझे पाल-पोसकर बड़ा किया। खुद भूखी रहकर मुझे खिलाया। आज मुश्किल घड़ी में मैं तुम्हें छोड़कर चला जाऊँ ? नहीं माँ नहीं, मैं इतना कृतघ्न नहीं हो साकता। मैं कमजोर ही सही पर डाकू का सामना करूँगा। मैं मर भी जाऊँ, शहीद हो जाऊँगा फिर भी तुझे यहाँ अकेला छोड़कर नहीं जाऊँगा।'' डाकू सुमेर दरवाजे पर खड़ा सारी बात सुन रहा था। वह सोचने लगा कि सभी मेरे नाम से भी डरकर भागते हैं। परन्तु यह बालक तो मातृभक्त है। इसे किसीका खौफ नहीं है। धन्य है उसकी मातृभक्ति। डाकू को भी अपनी माँ की याद आ गई। उसके घर में भी माँ बीमार और गरीबी का आलम था। माँ की दवा के लिए भी पैसे न थे। वक्त की मार ने उसे डाकूओं की टोली में शामिल होने को मजबूर कर दिया। अतीत की यादों ने उसके हृदय को झकझोर कर जगा दिया। उसने सोचा मेरी माँ ने तो दवा और सेवा के अभाव में दम तोड़ दिया परन्तु अब और किसी माँ को ऐसी मौत मरने नहीं दूँगा। धन्य है यह बालक, जो अपने प्राणों की परवाह किए बिना अपनी माँ के प्राणों की रक्षा व सेवा के लिए चट्टान की तरह खड़ा है। इसका अहित करके मैं अपनी वीरता को शर्मसार करूँ? इसके घर के जलते दीपक ने मेरे भीतर की इंसानियत की लौ जला दी है। वह फूटफूटकर नन्हें बालक की तरह रोने लगा। उसकी आवाज सुनकर माँ-बेटा दोनों सिहर गए। डाकू ने दोनों को ढ़ाढ़स बंधाया कहा - ''तेरे घर की ज्योत सदा जलती रहे।'' ऐसी दुआ देकर वो उल्टे पैर लौट गया।

20. 'सूझ-बूझ और बलिदान'

(वीर बालक छगन)

आज से लगभग डेढ़ सौ वर्ष पूर्व की बात है, जब देश पर अंग्रेजों का शासन हुआ करता था। डकैती, चोरी, आतंक व अराजकता का माहौल चारों ओर था। लोगों का जीना दुर्भर हो रहा था। घटना नवसारी के पास के छोटे से गाँव मरौल की है। एक दिन अफवाह आई कि पीढ़ाराओं ने तलकपर गाँव पर हमला कर दिया है। लूट-पाट के किस्सों से आस-पास का सारा क्षेत्र परेशान था। मानों इन पीढ़ाराओं के लालच का कोई अंत न था। खबर थी कि वो कभी भी हमला कर सकते हैं। बस एक नदी को पार करने की देरी थी।

गाँव में सभी बचाव की चर्चा कर रहे थे। वहीं एक बालक छगन उन सब की बातें ध्यान से सुन रहा था। उसने बड़ी समझदारी से कहा - "यदि हम सब मिलकर सामना करें तो अवश्य ही उसको हरा पाएंगे।" उसने हर एक घर से युवान को लड़ने के लिए तैयार होने का आह्वान किया। परन्तु कुछ तो भय और कुछ स्वार्थ प्रवृत्ति के कारण आगे आने को तैयार न हुए। छगन के मन में रोष के साथ-साथ दुःख भी था। उसने निश्चय किया कि चाहे कुछ भी हो जाये मैं अपने गाँव को लूटने नहीं दूँगा। वह अकेला ही गाँव के बाहर नदी की ओर चल पड़ा। नदी में काफी फिसलन थी फिर भी वह बिना रूके चलता रहा। पीढ़ाराओं की नजर उस पर पड़ी। उन्होंने छगन को घेर लिया। पुछा तुम कौन हो ? छगन ने धैर्य से निडर होकर जवाब दिया - "मैं छगन हूँ और नदी के उस पार के गाँव से आया हूँ। क्या तुम लोग रास्ता भटक गए हो ? मैं तुम्हें तुम्हारी मदद कर दूँ ?" सरदार ने कहा - "हमें गाँव जाना है। नदी पार करनी है। क्या तुम रास्ता जानते हो ?" छगन ने कहा - "हाँ ! हाँ ! क्यों नहीं ?जल्दी चलो नदी में बाढ़ आने वाली है। जल्दी से नदी पार कर लेते हैं, मेरे पीछे-पीछे आ जाओ। सभी उसका अनुसरण करने लगे। ज्यों-ज्यों नदी में आगे बढ़ने लगे, नदी की गहराई और फिसलन दोनों बढ़ने लगी। पीढ़ार घबराने लगे। छगन उन्हें हिम्मत बँधाते हुए आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करने लगा। छगन धीरे-धीरे उन्हें नदी के सबसे अधिक गहरे और फिसलन वाली जगह पर ले गया। एक तरफ अंधेरा होने लगा और सारे के सारे उस कीचड़ में फंस गए। छगन खुद को भी न बचा पाया परन्तु उसने अपने प्राणों की आहुति देकर के भी पूरे गाँव को बचा लिया था। सभी ने उसके साहस, सूझ-बूझ और बलिदान की हृदय से भूरी-भूरी प्रशंसा की।

21.'माता-पिता को यात्रा'

(श्रवणकुमार)

एक बार श्रवणकुमार नामक एक लड़का था। उसके माता-पिता बूढ़े और अंधे थे। कारणवश परिवार के सारे कार्य उसे अकेले ही करने पड़ते थे। वह अपने माता-पिता को बहुत चाहता था और उनके प्रति समर्पित था। एक दिन उसके बूढ़े माता-पिताने तीर्थ यात्रा पर जाने की इच्छा व्यक्त की। एक तराजू की तरह उसने दो टोकरो को तीन रस्सियों से एक बांस के लकड़े पर बांधकर एक सवारी बनाई। अब एक टोकरे में माता और दूसरे में पिता को बैठाकर, बास के लकड़े को अपने कंधे पर उठा कर तीर्थ यात्रा पर चल पड़ा।

रास्ते में उसके माता-पिता को प्यास लगी। श्रवण कुमार टोकरों को जमीन पर रखकर घड़े में नदी से पानी भरने गया। उसी समय राजा दशरथ जंगल में शिकार कर रहे थे। उन्होंने नदी में से पानी की आवाज सुनकर अनुमान लगाया कि कोई जानवर है और उस दिशा में तीर चला दिया। बद्किस्मती से वह जानवर नहीं, अपितु श्रवण कुमार था। तीर उसे लगा और वह मौत के करीब था।

जब दशरथ को अपनी गलती का एहसास हुआ तो उसे बहुत दुख हुआ और उसने श्रवण कुमार को पूछा कि वह उसका दर्द कैसै कम कर सकता है। अंतिम सांसे लेते हुए श्रवणकुमार ने दशरथ राजा को अपनी कहानी बताई और उसने अपने माता-पिता को पानी पिलाने को कहा। दशरथ पानी का घड़ा लेकर अंधे माता-पिता के पास गया। उसने अनजाने में हुई अपनी गलती स्वीकारते हुए क्षमायाचना की। यह सुनकर दोनो माता-पिता अत्यंत दुखी हुए और दशरथ को श्राप दिया कि वह भी एक दिन अपने पुत्र के वियोग से दुखी होकर मरेगा। फिर माता-पिता उसी नदी में डुबकर मर गए। इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें अपने माता-पिता के प्रति समर्पित होना चाहिए और उनकी खूब सेवा करनी चाहिए। राजा दशरथ की भांति कभी भी अपनी गलती स्वीकार करने से डरना नहीं चाहिए।
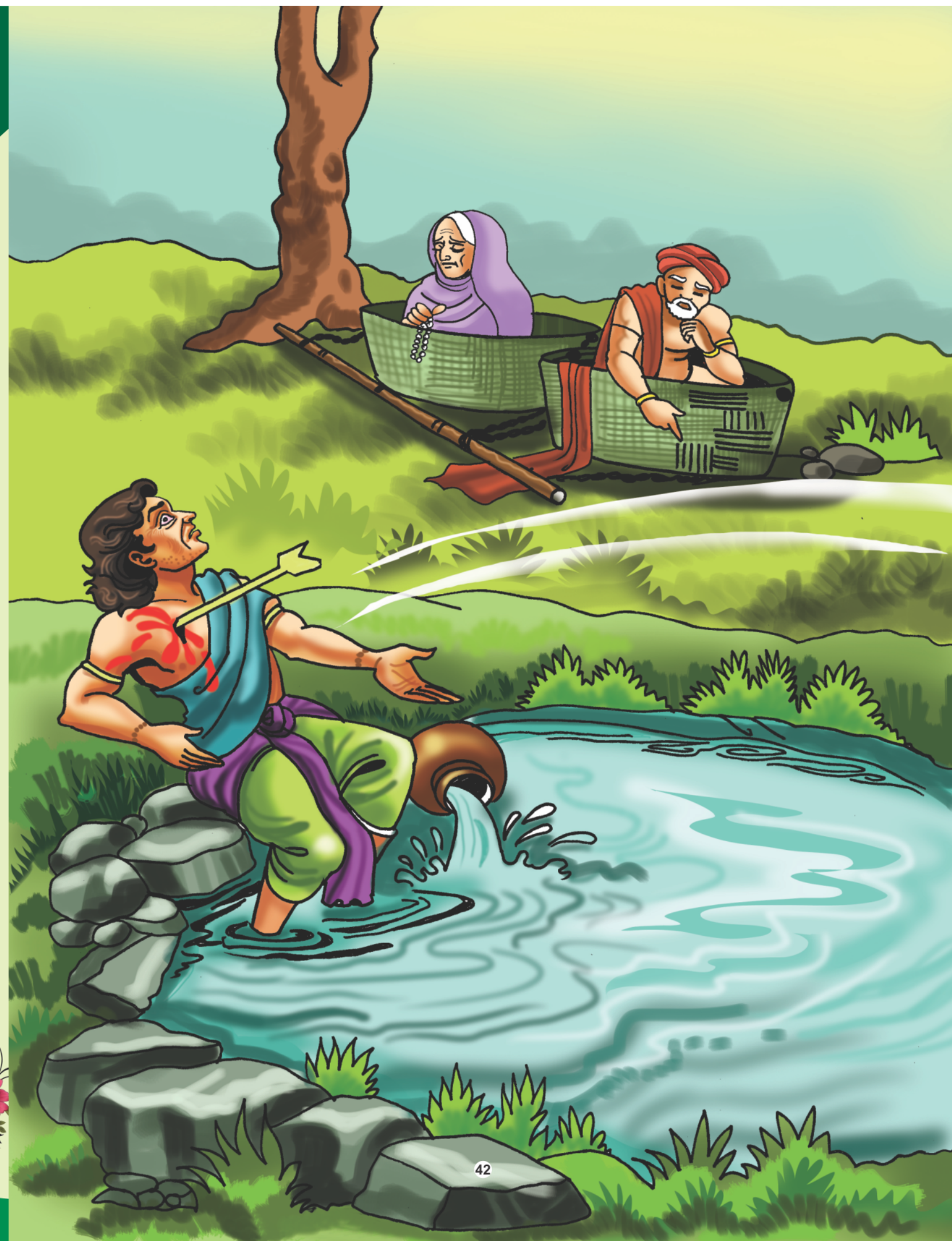
22. 'रजोहरण ले लिया'

(वज्रस्वामी)

धनगिरि एक ब्राह्मण था जो तुंबिवन में रहता था। उसके सुनंदा नाम की सुंदर पत्नी थी। एक बार धनगिरि ने सिंहगिरि नामक जैन संत देखा। धनगिरि संत के शब्दों से इतना प्रभावित हुआ कि वह अपनी गर्भवती पत्नी को छोड़कर साधु बन गया।

कुछ समय पश्चात्, सुनंदा ने एक सुंदर पुत्र को जन्म दिया। बच्चे को देखकर एक पडोसन बोली - 'यदि धनगिरि ने संन्यास नहीं लिया होता तो वह खूब उत्साह से अपने पुत्र का जन्म मनाता।' बच्चे ने यह शब्द सुने, खासकर 'दीक्षा' जो वह पिछले जन्म में करोड़ो बार दोहरा चुका था। वह तड़पकर रोने लगा। फिर वह काफी बार रोता और माता को परेशानी होती।

कुछ समय व्यतीत होने के बाद, आर्य सिंहगिरि अपने शिष्यों के साथ धनगिरि सहित शहर में आए। धनगिरि सुनंदा के घर गोचरी लेने गए। उस समय बच्चा रो रहा था। सुनंदा ने धनगिरि से कहा : 'देखो इस बच्चे को, मुझे परेशान कर दिया है। उसे अपने साथ लेजाकर मुझे मुक्त क्यों नहीं कर देते ?' साधु ने कहा : 'मैं इसे ले जाने के लिए तैयार हूँ, परंतु इसे वापस मत माँगना।' वह बच्चे को अपने साथ ले गया। गुरु को बच्चा वजनदार लगा, इसलिए उसका नाम व्रजकुमार रख दिया।

एक श्राविकाने उस बच्चे के पालन की जवाबदारी ली। वह धार्मिक प्रवृत्ति की थी और भजन-कीर्तन लोरी की तरह बच्चे को सुनाती थी। बच्चा यह शब्द सुनकर तुरंत ग्रहण कर लेता। तीन वर्ष का होते-होते तो वह ज्ञान की बातें करने लगा।

सुनंदा को अपने पुत्र की प्रगति का पता चला और वह उसकी चाहना करने लगी। उस श्राविका से अपना पुत्र वापस लेने का निश्चय किया। उसने आर्य सिंहगिरि से अपना पुत्र वापिस मांगा। पर उन्होंने मना कर दिया। हारकर वह राजा के पास अपना पुत्र मांगने गई।

राजा चक्कर में पड़ गया। उसने बच्चे को एक कोने में बैठाकर धनगिरि और सुनंदा को उसको सामने बैठाया। बच्चे को किसी एक को चुनने को कहा। सुनंदा ने आकर्षित करने के लिए अपने पास मिठाईयाँ और खिलौने रखे थे, परंतु वज्रकुमार ने पिता को चुना और हाथ में साधु का रजोहरण ले लिया। अतः राजा ने बच्चा धनगिरि को सौंप दिया।

एकदिन जब सारे साधु बाहर गए हुए थे, तब वज्रमुनि एक ऊँचे आसन पर बैठकर व्याख्यान देने का अभ्यास कर रहे थे। उसी समय गुरुजी आए और वज्रमुनि का अति उत्कृष्ट व्यख्यान सुनकर स्तब्ध रह गए। कम उम्र में ही उन्हें आचार्य बना दिया गया। वज्रस्वामी रथावर्त पहाड़ी पर उपवास करते हुए अरिहंत शरण हुए।
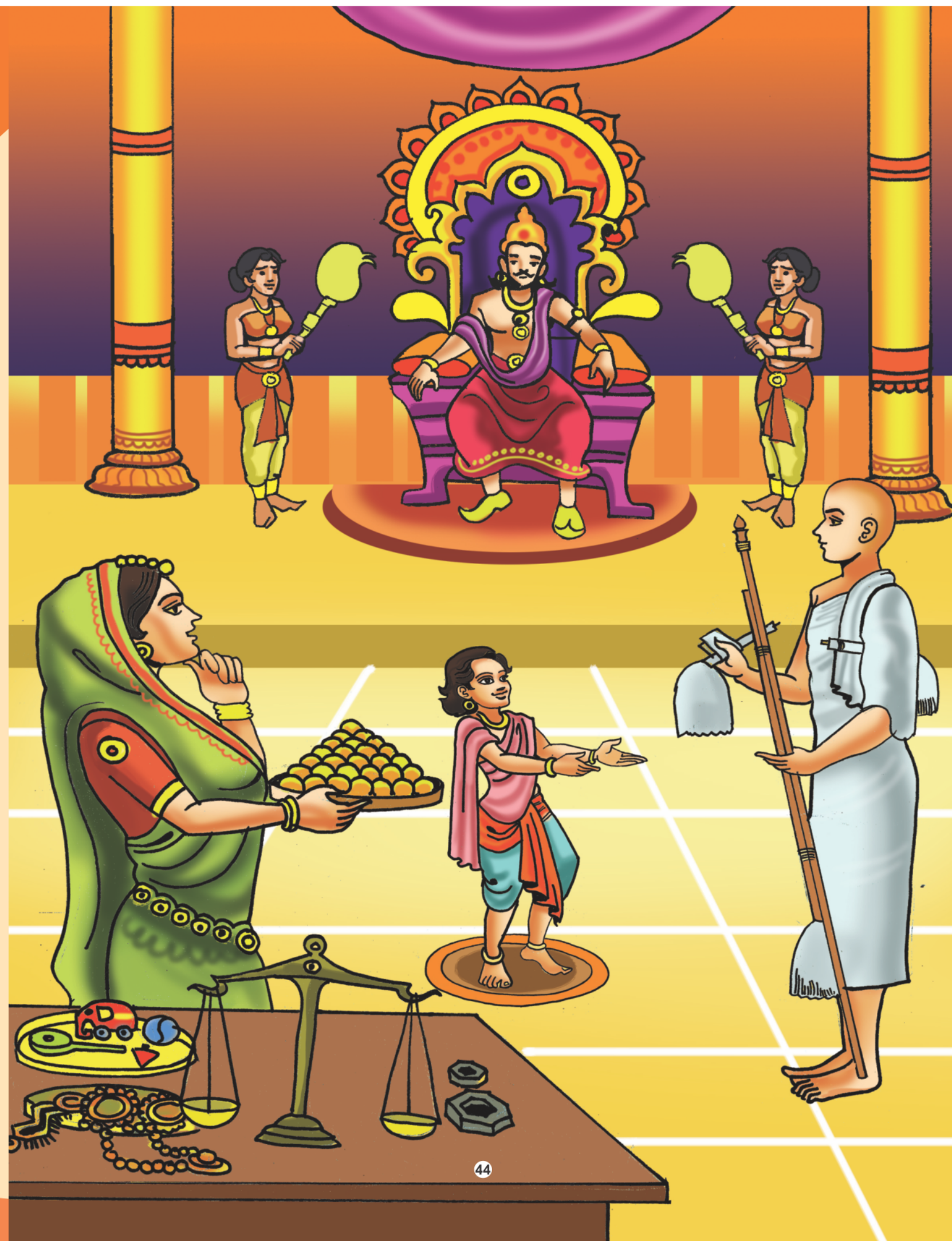
23. 'केवलज्ञान प्राप्त हुआ'

(ऐमुक्त)

एक बार तीर्थंकर महावीर के शिष्य, गौतम पोलासपुर शहर के राजमहल के आगे से गुजर रहे थे। राजकुमार ऐमुक्त दोस्तों के संग खेल रहे थे। अचानक उनकी नजर गौतम पर पड़ी। गौतमस्वामी के शांत व्यक्तित्व से प्रभावित होकर वे अपने मित्रो के साथ खेलना भूल गए।

गौतम ने अपना संक्षिप्त में श्रमण-साधु होने का परिचय दिया। ऐमुक्त को संतोष नहीं हुआ। वह हर प्रकार के प्रश्न करने लगा, जैसे 'आप कहाँ रहते हो ? क्या करते हो ? खाना कैसे लाते हो ? कहाँ से आए हो ? कहाँ जा रहे हो ?'

गौतम ने मुस्कुरा के कहा : 'हम संत है। आत्मनिरीक्षण हमारा ध्येय है। घर-घर हम घूमते रहते हैं। खाने की दिक्कत नहीं है। जो भी शुद्ध सात्विक भोजन मिलता है, हम खा लेते है। अभी मैं शहर के बाहर मैदान से आया हूँ। हमारे गुरु भी वहीं है। मैं लोटकर वहां जाऊँगा।'

ऐमुक्त प्रसन्न होकर गौतम के साथ गुरुजी को देखने चल पड़ा। वहाँ महावीरस्वामी को व्याख्यान देते देखा। कई श्रावक सुन रहे थे। मधुर वाणी का उस पर गहरा प्रभाव हुआ। व्याख्यान पूर्ण होते ही वह महावीरस्वामी के पास जाकर बोला : 'है प्रभु ! आपकी शरण में आया हूँ। मुझे अपना शिष्य बना दो।' महावीरस्वामी ने उसे अपने माता-पिता की आज्ञा लेने को कहा। माता-पिता की स्वीकृति लेकर वह आया तो उसे शिष्य बना दिया।

वर्षा ऋतु थी। कुछ समय पश्चात् भारी वर्षा हुई थी मकई के खेतों की क्यारियों से पानी बह रहा था। बालमुनि आकर्षित होकर खड़े थे। ऐमुक्त शायद भावनाओं में खो गए थे। वह दौड़कर बहते पानी की ओर आए और अपने लकडी का भिक्षा पात्र उसमें तैरा दिया। उनके साथी मुनि गण आश्चर्यचकित होकर उन्हें वही छोड़ गए। सारे संत संदेह करने लगे कि आखिर गुरुजी ने ऐसे बच्चे को दीक्षा क्यों दिलवाई ? उन्होंने सोचा कि वह तो हम गुरुवर को नहीं पूछ पायेंगे। उन्होंने बालमुनि को फटकारा। महावीरस्वामी ने बालमुनि की अवगणना करने का निषेध किया।

ऐमुक्त अपनी भावनाओं में से बाहर निकलने लगे। उन्हें विचार आया : 'यह मैंने क्या किया ? मैं तो प्रभु शरण में अपनी जीवन की नैया को स्वर्ग मार्ग पर ले जाने आया था ? यह मैं पानी में कौन सी नौका चलाने का प्रयास कर रहा हूँ ? कितना मूर्ख हूँ मैं ? मैं खेल में इतना तल्लीन था कि अपने साथी मुनियों की बात भी नहीं सुनी।'

इस प्रायश्चित्त से ऐमुक्त को केवलज्ञान प्राप्त हुआ और मोक्ष प्राप्त हुआ।

हमें यह शिक्षा मिलती है कि पिछले जन्म की आराधना अगले जन्म में हमारे काम आती है। वर्तमान परिस्थिति के आधार पर किसी पर उंगली नहीं उठानी चाहिए।

24. 'दिव्य बालक'

बात वरिहा 45 साल पुरानी है । उन दिनो में तीर्थ प्रभावक पूज्य गुरुदेव श्री विक्रमसूरीश्वरजी महाराज कर्णाटक के बीजापूर शहर में बिराजमान थे । दोपहर का समय था । पूज्य गुरुदेव हम सात शिष्यो के तत्त्वार्थ सूत्र की वाचना दे रहे थे । परम पूज्य गीतार्थ मूर्धन्य श्री सिद्धसेन गणिजी म. तत्त्वार्थ टीका पर वाचना चल रही थी । में उस समय मुमुक्षु था ।

वाचना के बीच कुछ महाराष्ट्रीय शिक्षको का पधारना हुआ । उन्होंने पूज्य गुरुदेव से शिष्टाचार पूर्वक बात रखी की हमारे साथ यात्रा प्रवार में कुछ बच्चें आर्य है । उसमें एक जैन बच्चा भी है । जो प्रभु पूजा किये बिना कुछ खाता भी नहीं और पीता भी नहीं, अतः प्रतिदिन हमे उसको यात्रा प्रवास में जिस जगह जाए वहा जैन मंदिर कि तलाश करके उसकी विधि करानी चली है । आज यहा बीजापुर गोला गूतज और वोली गूंजज के प्रवास में आए तो यहा मंदिर को ढूंढते ढूंढते हमे मालूम हुआ कि यहा मंदिर है । अतः हम यहाँ आए है । लेकिन आने पर मालूल हुआ कि मंदिर मंगल है । अतः आप मंदिर खुलवाने की कृपा कराए तब पुजारीजी को बुलवाया गया और मंदिर खुलवाके उस बच्चे कि पूजा विधि करायी गयी । यहां पे हमें बच्चे कि संकल्प शक्ति और धर्म का द्रढ प्रेम दिखाता है । इस बालक कि तरह आज भी कही बालको में नियम का पालन दिखता है । थोड़े समय पहले कोई एक परिवार के साथ कोई बच्चा बाहर घूमने गया तब होटल में Veg. & Non Veg. में दोनो था । बच्चे के ना कहने पर भी उसके पिताजी के साथ जाना पड़ा लेकिन जब Vegetable Soup मंगाया गया तब उससे कोई पक्षी का पंख मिला । तब बच्चे कि बात को उसके पिताजी ने सही माना । इस तरह आप बच्चो को भी इसी तरह द्रढ, धर्म, प्रेम एवं नियम की पाबंदी बनायी रखनी चाहिए ।